

काशी

काशी  
की विविध  
यात्राक्रम

## विविध यात्राक्रम

9-5

र प्रधान देवताओं के दर्शन पूजन के उपरांत समादर करने की प्राचीन परम्परा रही है और त्येक तीर्थ के अपने अपने यात्राक्रम स्थापित हुए जब काशी क्षेत्र दस क्रोश ( ४००० गज का एक यास का वृत्ताकार था, तब यहां के क्या यात्रा क्रम थे, इसका अब स्पष्ट संकेत नहीं मिलता परन्तु जबसे वह शंखाकार हो गया है तब से यहां के यात्राक्रमों का विवेचन पुराणों में मिलता है और उनपर आधृत रुढ़ियां भी जनमानस में परम्परागत रूप में विद्यमान हैं।

वर्तमान परिस्थिति में काशी क्षेत्र तथा वाराणसी क्षेत्र प्रायः एकीभूत हो गए हैं और उनकी यात्राएँ भी इसी कारण एक ही तन्त्र में बँधी हुई हैं। पंचक्रोशी यात्रा को छोड़कर अन्य सभी यात्राएँ काशी या वाराणसी दोनों के ही अंतर्गत आती हैं और यात्रा की दृष्टि से उनमें कोई भी भेद नहीं है।

यात्राएँ सदैव ही दो प्रकार की होती हैं। एक तो वे जिनको बाहर से आए हुये तीर्थयात्री करते हैं और दूसरी वे जो उस तीर्थ के निवासी करते रहते हैं। यात्राक्रम इन तीर्थवासियों की सुविधानुसार प्राचीन काल से ही निर्धारित होते रहे हैं और यह एक निर्विवाद तथ्य माना जाता रहा है कि तीर्थ के निवासी कोई न कोई यात्रा नित्य करते रहेंगे। भगवान् विश्वनाथ की कृपा से काशीवासी धर्म - प्राण लोग अपनी शक्ति तथा समय के अनुसार अभी भी इस नियम का पालन करते हैं। काशीखंड में कहा गया है कि ऐसा कोई भी दिन नहीं होना चाहिये जिस दिन कोई न कोई यात्रा न की जाय।

‘न वन्ध्यं दिवसं कुर्याद्विनायात्रा क्वचित्कृती’। शारीरिक अथवा अन्य अनिवार्य कारणों से यदि स्वयं यात्रा न कर सके तो प्रतिनिधि द्वारा भी यात्रा करायी जा सकती है और यदि वह भी संभव न हो तो

यात्रा के निष्क्रय के रूप में जलकुंभ तथा मिष्टान्न के दान का भी विधान शास्त्रोक्त है। परंतु जैसा स्पष्ट है यह आपद्धर्म ही हो सकता है सामान्य धर्म नहीं।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, यात्राएँ दो प्रकार की होती हैं—विशिष्ट एवं सामान्य। विशिष्ट यात्राएँ लम्बी होती हैं और उनमें समय भी अधिक लगता है। सामान्य यात्राएँ छोटी वड़ा सभी प्रकार की होती हैं और अपनी शक्ति तथा सुविधा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उपयुक्त यात्रा क्रम स्वीकार कर सकता है।

वाराणसी की विशिष्ट यात्राओं में पंचक्रोशी यात्रा, उत्तरमानस यात्रा, दक्षिणमानस यात्रा, विश्वेश्वर की अन्तर्गृह यात्रा, केदारेश्वर की अन्तर्गृहयात्रा तथा छत्तीस एवं बयालीस लिंगों की यात्रा के नाम लिये जाते हैं। ये सभी पर्याप्त लम्बी तथा श्रमसाध्य हैं और आजकल के व्यस्त जीवन में कुछ थोड़े ही लोग इनका निर्वाह कर सकते हैं परन्तु सामान्य यात्राएँ सभी प्रकार के लोगों की परिस्थिति के अनुकूल पुराणों में बतायी गयी हैं जिनमें से प्रत्येक धर्मप्राण प्राणी कोई न कोई यात्रा अपने लिये छांट ले सकता है।

इस कारण सामान्य यात्राओं का वर्णन अपेक्षाकृत अधिक लाभ-प्रद होने की आशा है और इसी आधार पर उनका विवेचन पहले किया जा रहा है। वाराणसी में दो प्रकार के यात्राक्रम बताए गये हैं। एक तो जलतीर्थों की यात्राएँ और दूसरी देवायतनों की यात्राएँ। ये स्वतंत्र रूप में अलग-अलग भी की जाती हैं और संयुक्त रूप में भी होती हैं परन्तु इनका वर्णन स्पष्टता की दृष्टि से अलग अलग ही किया जा रहा है।

## जलतीर्थों की सामान्य यात्राएँ

क) जलतीर्थों के सामान्य यात्राक्रम

(१) एकतीर्थी यात्रा—‘चक्रपुष्करिणी तीर्थे स्नातव्यं प्रतिवासरम्’ अर्थात् चक्रपुष्करिणी में नित्य स्नान करे ॥ (ब्रह्मवैवर्त पुराण)

(२) द्वितीर्थी यात्रा—दो प्रकार की है :—

(१) प्रातः पंचनदे स्नात्वा मध्याह्ने मणिकर्णिकाम् ।

अर्थात् प्रातः पंचगंगा-घाट पर और मध्याह्न मणिकर्णिका में ।



(२) “प्रातः दशाश्वमेधे च मध्याह्ने मणिकर्णिकाम्” अर्थात् प्रातः दशाश्वमेध घाट पर [ विशेषतः अहल्याबाई घाट पर ] और मध्याह्न में मणिकर्णिका पर स्नान करे ।

स्पष्ट ही यहां भौगोलिक सुविधा का समादर हुआ है ।

### (३) त्रितीर्थीयात्रा

“आदौ प्रयानेतु स्नात्वा पंचगंगां ततः परम् ।

ततः पुष्करिणीतीर्थे स्नात्वा मुच्येत बंधनात् ॥”

पहले दशाश्वमेध घाट पर प्रयाग तीर्थ में, फिर पंचगंगा घाट पर, और अंत में चक्रपुष्करिणी तीर्थ में स्नान करे । दशाश्वमेध घाट पर एक सोता पश्चिम से पूर्व में जाकर गंगा जी में जिस जगह गिरता है, वही प्रयाग तीर्थ है ।

### (४) चतुस्तीर्थी यात्रा

“पुरये पिलिप्पिला तीर्थे त्रिसरित्परिसेविते ।

ततः पंचनदे स्नात्वा मणिकर्णीं हृदे ततः ॥

ततो ज्ञानोदवाप्यान्तु स्नात्वा विश्वेशमर्चयेत् ॥”

पहले त्रिलोचन घाट पर फिर पंचगंगा घाट पर पुनः मणिकर्णिका में और अंत में ज्ञानवापी में स्नान करे । ज्ञानवापी का जल अब दुर्लभ है, अतः वहां केवल मार्जन ही संभव है ।

### (५) पंचतीर्थी यात्रा

यह यात्रा अत्यन्त पुनीत है । विशिष्ट यात्राओं में इसकी गणना होती है । कम से कम पन्द्रह सौ वर्षों से यह यात्राक्रम इसी प्रकार चल रहा है ।

अस्सी घाट से प्रारम्भ करके दशाश्वमेध घाट ( विशेषतः अहल्याबाई घाट ) पर स्नान करते हुए वरणासंगम जाना होता है । वहाँ संगम में स्नान करके लौटकर पंचगंगा घाट पर और अन्त में मणिकर्णिका घाट पर स्नान करने का क्रम है । इन स्थानों पर स्नान करने के साथ ही साथ उन स्थानों के विशिष्ट देवायतनों का भी दर्शन पूजन किया जाता है । इनका क्रम इस प्रकार है :—

(१) अस्सीघाट पर स्नान करने के बाद अस्मिन्धव तथा त्रिविक्रम (दुलसाघाट के समीप), अक्सिगमेश्वर (राजी मुरसरि के मंदिर

के द्वार पर), लोलाकारादित्य तथा अर्कविनायक ( लोलाक के पूर्व समीप में ही ) का दर्शन पूजन ।

(२) दशाश्वमेध घाट ( विशेषतः अहल्याबाई घाट ) पर स्नान तथा दशाश्वमेधेश्वर ( बड़ी शीतला जी के मंदिर में ), बन्दी देवी ( मकान नं० डी० १७/१०० में ) शूलटंकेश्वर ( दशाश्वमेध घाट पर ), आदिवाराह ( वाराहेश्वर का दर्शन डी० १७/१११ में ), सोमेश्वर ( मानमंदिर घाट पर डी० १६/३४ के समीप ), दाल्भ्येश्वर ( सोमेश्वर के समीपही ), तथा प्रयागमाधव ( वाराहेश्वर के समीप डी० १७/१११में ) का दर्शन पूजन ।

(३) वरणा संगम में स्नान तथा आदिकेशव, संगमेश्वर, केशवादित्य, शानकेशव, नक्षत्रेश्वर, वेदेश्वर (ये सब देवता आदिकेशव मंदिर में अथवा उससे मिले हुए मंदिरों में हैं ) तथा खर्वविनायक (वरणा संगम से नगर की ओर आने के माग पर आदिकेशव के पिछवाड़े) का दर्शन पूजन ।

(४) पंचगंगा घाट पर ( विशेषतः कोनियाघाट पर ) स्नान और विंदुमाधव ( के २२/३३ में ), गभस्तीश्वर के. २४/३४ में ), तथा मंगलागौरी ( वहीं ), का दर्शन पूजन ।

(५) मणिकर्णिका घाट पर स्नान तथा मणिकर्णादेवी ( चक्रपुष्करिणी में ), सिद्धविनायक ( सी के. ६।१ के समीप ), तथा मणिकर्णिकेश्वर ( सी के ८/१२ में । इनका दर्शन ऊपर से गोमठ के समीप से भी होता है ) का दर्शन पूजन और अंत में विश्वेश्वर अन्नपूर्णा तथा ज्ञानवापी का अर्चन पूजन करके यात्रा समाप्त होती है ।

(६) पडंग तीर्थ यात्रा

“पादोदकासिसंभेदे शानोदमणिकर्णिकाः ।

पडंगीयं महायोगो ब्रह्मधर्महृदावधि ॥

अर्थात् वरणासंगम, असिसंगम, ज्ञानवापी, मणिकर्णिका, ब्रह्महृद ( अब लुप्त है ), तथा पंचगंगा घाट पर स्नान करने से पडंग तीर्थ यात्रा पूरी होती है ।



## (ख) शिवायतनों के सामान्य यात्राक्रम

### (१) नित्य यात्रा अथवा दैनंदिनी यात्रा

द्रुपदादित्य, द्रौपदी, विष्णु, दंडपाणि तथा महेश्वर का दर्शन पूजन करके दुर्दिराज की अर्चना करे और तब ज्ञानवापी में स्नान करके नंदिकेश्वर, तारकेश्वर, महाकालेश्वर और दंडपाणिका पुनः दर्शन पूजन करे। यह दैनंदिनी यात्रा कही जाती है। प्राचीन काल में दुर्दिराज को छोड़कर अन्य सभी देवता ज्ञानवापी के प्रांगण में ही थे। अब द्रुपदादित्य अक्षयवट में हैं ( सी. के. ३५/२० में ) तथा द्रौपदी लुप्त हैं परन्तु इनको नमस्कार द्रुपदादित्य के समीप ही होता है। विष्णु ( विश्वनाथ जी के घेरे में नैऋत्यकोण के छोटे शिवालय में सत्यनारायण नाम से ), तथा दंडपाणि दुर्दिराज गली में ( सी. के. ३६/१० में ), हैं। महेश्वर का स्थान ज्ञानवापी के नैऋत्यकोण के पीपल के नीचे था वहां स्थानपूजन होता है। ज्ञानवापी के आग्नेय कोण के पीपल के समीप महाकालेश्वर का स्थान पूजन किया जाता है। नंदिकेश्वर ( ज्ञानवापी के उत्तर ) तथा तारकेश्वर ( ज्ञानवापी के पूर्व गौरीशंकर के नीचे ) का स्थान पूजन ही होता है।

इस दैनंदिनी यात्रा के बाद विश्वेश्वर तथा अन्नपूर्णा का दर्शन पूजन करके नित्य यात्रा समाप्त होती है—ऐसा काशीखण्ड, सनत्कुमारसंहिता, ब्रह्मवैवर्त पुराण इत्यादि से जान पड़ता है।

### (२) एकायतन यात्रा

सनत्कुमार संहिता के अनुसार मणिकार्णिका घाट पर स्नान तथा विश्वेश्वर का दर्शन पूजन। विश्वेश्वर के घेरे में आग्नेय कोण के छोटे मंदिर में अविमुक्तेश्वर हैं जो विश्वनाथजी के गुरु नाम से प्रसिद्ध हैं। उनका दर्शन पूजन अवश्य ही करना चाहिये।

### (३) द्विरायतन यात्रा

मणिकार्णिका घाट पर स्नान करके मणिकर्णेश्वर का (मकान नं० सी. के. ८/१२ में) पूजन और तब- ज्ञानवापी में मार्जन तथा विश्वनाथजी का दर्शन पूजन। यह नंदिपुराण में कहा गया है।

### (४) त्रिरायतन यात्रा

इसका त्रिकंडक यात्रा भी कहते हैं। इसका वर्णन प्राचीन लिगपुराण में मिलता है। इस यात्रा में विश्वनाथ मंदिर के अविमुक्तेश्वर; स्वर्णेश्वर

( प्रह्लादघाट से पूर्व नया महादेव नाम से मकान नं० ए० ११/२९ में ) तथा मध्यमेश्वर ( मधमेश्वर मुहल्ले में के ५३/६३ के सामने ) का दर्शन पूजन होता है । ज्ञानवापी, प्रह्लादघाट पर गंगाजी, तथा मैदागिन के पोखरे में मार्जन भी किया जाता है ।

#### (५) चतुरायतन यात्रा

यह यात्रा प्राचीन लिंगपुराण में बतलाई गई है । इसमें मढ़िया घाट पर शैलेश्वर, वरणासंगम पर संगमेश्वर ( आदिकेशव के नीचे के मंदिर में ), प्रह्लाद घाट के पास नयामहादेव के नाम से प्रसिद्ध स्वर्णेश्वर ( ए-१२/२६ में ) तथा मधमेश्वर मुहल्ले में मध्यमेश्वर ( के. ५३/६३ के सामने ) का दर्शन पूजन करने का क्रम है ।

#### (६) पंचायतन यात्रा

प्राचीन लिंगपुराण के आधार पर इस यात्रा में कृत्तिवासेश्वर ( के. ४६/२३ में ), मध्यमेश्वर ( के. ५३/६३ के सामने ), ओंकारेश्वर ( मछोदरी के उत्तर पठानीटोले के पास हुक्कालेसन मुहल्ले में टीले के ऊपर ए-३३/२३ में ), पिशाचमोचन पर कपर्दीश्वर, और अंत में विश्वेश्वर का दर्शन पूजन करने की विधि है । कूर्म पुराण में भी इस यात्रा का उल्लेख है ।

#### (७) षडायतन यात्रा

इसको षडंग यात्रा भी कहा जाता है । इस के तीन क्रम मिलते हैं ।

(१) अविमुक्तेश्वर, स्वर्णेश्वर, ओंकारेश्वर, चंडेश्वर, मध्यमेश्वर तथा कृत्तिवासेश्वर का दर्शन पूजन । इनमें चंडेश्वर का वर्तमान स्थान निश्चित नहीं है । यह प्राचीन लिंगपुराण में वर्णित है । अन्य पुराणों में इस यात्रा के दो और रूप भी वर्णित हैं ।

(२) ओंकारेश्वर, कृत्तिवासेश्वर, केदारेश्वर, त्रिलोचन (त्रिलोचन घाट के ऊपर प्रसिद्ध) आत्मावीरेश्वर ( संकठा जी के समीप सी. के. ७/१५८ में ) तथा विश्वेश्वर का दर्शन पूजन ।

(३) विश्वेश्वर, विशालाक्षी गौरी (मीर घाट मुहल्ले में डी. ३/८५ में) गंगा जी ( किसी भी घाट पर ), कालमैरव ( के. ३२/२२ में प्रसिद्ध ), हुंदिराज ( प्रसिद्ध ), तथा दंडपाणि ( हुंदिराज गली में सी. के. ३६/१० में गली के कोने पर प्रसिद्ध ) का दर्शन पूजन ।



## (८) अष्टायतन यात्रा

## द्वारा मदल

(क) प्राचीन लिंगपुराण के अनुसार प्राचीन काल में इस यात्रा को बड़ा माहात्म्य था ।

ईश्वरगंगी में स्नान तथा अग्नीध्रेश्वर (के. ६६।४ में नरहरिपुरा मुहल्ले में यागेश्वर नाम से प्रसिद्ध), उर्वशीश्वर (जे. ५६/१०८ में औसानगंज में), लांगलीश्वर (खोवावाजार सी. के. २८/४ में), आपादीश्वर (राजा दरवाजा के पास सी. के. ५४/२४ में अथवा काशीपुरा में महाराणी बेतिया के मंदिर में), भारभूतेश्वर (सी. के. ४४/४४ के पास), त्रिपुरांतकेश्वर (सिगरा में डी. ५९/६५ में टीले पर), नकुलीश्वर विश्वनाथ मंदिर के समीप अक्षयवट में), तथा त्र्यंबकेश्वर (बड़ादेव मुहल्ले में डी. ३८/२१ में त्रिलोकनाथ नाम से प्रसिद्ध) का दर्शन पूजन यह इस यात्रा की विधि है ।

(ख) काशीखंड के अनुसार एक दूसरी अष्टायतन यात्रा भी होती है । इसमें दक्षेश्वर (वृद्धकाल के घेरे में के. ५२/६ में), पार्वतीश्वर (त्रिलोचन के समीप ए. ३।६२ आदिमहादेव के घेरे में) पशुपतीश्वर (नन्दनसाह के मुहल्ले के समीप सी. के. ३।६६ में), गंगेश्वर (वहीं सी. के. १३/७९ में) नर्मदेश्वर (आदिमहादेव के समीप ए. २/७६ में) गभस्तीश्वर (मंगला-गौरी के मंदिर में के. २४/३४ में), सतीश्वर (वृद्धकाल के पास के. ४६/३२ में), तथा तारकेश्वर (मणिकर्णिका घाट पर अथवा शानवापी के पूर्व गौरीशंकर के नीचे) का दर्शन पूजन किया जाता है ।

## (९) एकादशायतन यात्रा

प्राचीन लिंगपुराण की अष्टायतन यात्रा के प्रथम मात आयतन तथा मनःप्रकामेश्वर (साक्षीविनायक के समीप डी० १०/५० में, प्रीतिकेश्वर (समीप में ही डी० १०/८ में), मदालसेश्वर (नेपाली खपड़े में डी० ५/१३३ में), तथा तिलपर्णेश्वर (दुर्गा जी के मंदिर के द्वार पर) का दर्शन पूजन करने से यह एकादशायतन यात्रा पूरी होती है । यह यात्रा आजकल भी प्रसिद्ध है ।

## (१०) चतुर्दशायतन यात्रा

काशीखंड के अनुसार इस यात्रा के तीन क्रम हैं :-

(क) शैलेश्वर (मदिया घाट पर), संगमेश्वर (वरणासंगम पर आदि केशव के समीप), स्वामीश्वर (नया महादेव नाम से प्रह्लादघाट के

समीप ए० ११/२६ में ), मध्यमेश्वर ( के० ५३/६३ के सामने ), हिरण्य-  
गर्भेश्वर ( त्रिलोचन घाट पर ऊपर की मढ़ी में ), ईशानेश्वर ( बांसफाटक  
पर सी के. ३७/४३ ), गोप्रेक्षेश्वर ( लालघाट पर के. ४/२४ में गौरीशंकर नाम  
से प्रसिद्ध ), वृषभध्वज ( वरणासंगम के पूर्व कपिलधारा के तट पर ), उप-  
शांतेश्वर ( संकटाजी के पास सी के० २/४ में ), ज्येष्ठेश्वर ( सप्तसागर  
महल्ले में के० ६२/१४४ में ), निवासेश्वर ( वहीं समीप में के० ६३/२५ में ),  
शुक्रेश्वर ( अन्नपूर्णा जी के पिछ्वाड़े डी० ८/३० में ), व्याघ्रेश्वर ( सप्त-  
सागर में के० ६३/१६ में ), तथा जम्बुकेश्वर ( बड़े गणेश पर के० ५८/१०३  
में ) की यात्रा तथा इनका दर्शन पूजन यह एक क्रम है ।

( ख ) आंकारेश्वर ( मछोदरी के उत्तर ए० ३३/२३ में टीले के  
ऊपर ), त्रिलोचन ( त्रिलोचन घाट के ऊपर ए० २/८ में ), महादेव  
( त्रिलोचन के पिछ्वाड़े आदिमहादेव ए० ३/६२ में ), कृत्तिवासेश्वर  
( बृद्धकाल के समीप के० ४६/२३ में ), रत्नेश्वर ( समीप में के० ५३/४०  
में ), चन्द्रेश्वर ( सिद्धेश्वरी महल्ले में सी के० ७/१२४ में ), केदारेश्वर  
( प्रसिद्ध ), धर्मेश्वर ( मीरघाट के समीप धर्मकूप पर डी० २/२१ ), वीरे-  
श्वर ( संकटाजी के पास सी के० ७/१५८ में आत्मावीरेश्वर नाम से प्रसिद्ध ),  
कामेश्वर ( मछोदरी के दक्षिण प्रसिद्ध ), विश्वकर्माेश्वर ( स्ट्रीथफील्ड रोड  
पर ए० ३४/६१ में ), मणिकर्णेश्वर ( मणिकर्णिका घाट के ऊपर सी के०  
८/१२ में ), अविमुक्तेश्वर ( विश्वेश्वर के घेरे में ), तथा विश्वेश्वर का  
दर्शन पूजन यह यात्रा का दूसरा क्रम है ।

( ग ) अमृतेश्वर ( स्वर्गद्वारी पर सीके. ३३/१८ में ), तारकेश्वर ( मणि-  
कर्णिका घाट पर ), शानेश्वर ( लाहौरीटोले में डी. १/३२ में ), करणेश्वर  
( ललिता घाट के समीप सी. के. ३४/१० में ), मोक्षद्वारेश्वर ( करणेश्वर  
के पास ही ), स्वर्गद्वारेश्वर ( स्वर्गद्वारी पर सीके. १०/१६ में ), ब्रह्मेश्वर  
( बाल मुकुंद के चौहट्टे में डी. ३३/६६-६७ में ) लांगलीश्वर ( खोवाबाजार  
में सीके. २८/४ में ), बृद्धकालेश्वर ( दारानगर में ५२/३९ में ), वृषेश्वर  
( गोरखनाथ के टीले पर के. ५८/७८ में ), चंडीश्वर ( सदरबाजार में चंडीदेवी  
के मंदिर में ), नन्दिकेश्वर ( ज्ञानवापी के उत्तर स्थानपूजन-लिंगगुप्त है ,  
महेश्वर ( ज्ञानवापी के नैऋत्य कोण के पीपल के नीचे स्थानपूजन अथवा  
मणिकर्णिका घाट पर ) तथा ज्येष्ठेश्वर ( मोक्षद्वारेश्वर के समीप डी० के० १०  
में ) का दर्शन पूजन यह इस यात्रा का तृतीय क्रम है । पद्मपुराण के अनुसार



इन तीनों चतुर्दशायतनों को मिलाकर बयालीसलिंगयात्रा भी होती है जो प्रसिद्ध है। इसी प्रकार काशीखंड के अनुसार ओंकारादि चतुर्दश, शैलेश्वरादि चतुर्दश तथा दत्तेश्वरादि अष्टायतनों को मिलाकर छत्तीसलिंगयात्रा होती है।

### ( ग ) शिवायतनों के विशिष्ट यात्राक्रम

( १ ) अन्तर्गृह यात्रा—वाराणसी में तीन अंतर्गृहों की यात्राएं बताई जाती हैं। इनमें से विश्वेश्वर तथा केदारेश्वर की तो प्रसिद्ध हैं परंतु ओंकारेश्वर के अंतर्गृह की यात्रा अब लुप्तप्राय हो गई है। विश्वेश्वर की यात्रा का क्रम काशीखंड पर आधृत है। केदारेश्वर की यात्रा का विधान ब्रह्मवैवर्त पुराण के काशीकेदार माहात्म्य में बतलाया गया है। परंतु ओंकारेश्वर की यात्रा का वर्णन किस पुराण में है, यह अभी तक पता नहीं चला है। वाराणसी में इस समय केवल एक ही सज्जन हैं जिनको इस यात्रा का ज्ञान है और उनके निदेशन में पं० वैकुण्ठ नाथ उपाध्याय ने यह यात्रा की भी है। इन यात्राओं के क्रम नीचे दिये जा रहे हैं। ( ओंकारेश्वर की यात्रा 'परिशिष्ट' में देखिये )

( क ) विश्वेश्वर की अन्तर्गृह यात्रा—यात्रा प्रारंभ करने के पूर्व विश्वेश्वर के समीप के पांचो विनायकों का और तदुपरांत विश्वेश्वर का पूजन करके मुक्ति मंडप में यात्रा का संकल्प किया जाता है और फिर मणिकर्णिका घाट पर स्नान करके मणिकर्णेश्वर से यात्रा प्रारंभ होती है।

मोदविनायक काशी करवट में सी.के. ३२/१२ में, प्रमोद विनायक सी.के. ३१/१६ में, सुमुख विनायक सी.के. ३५/८ में, दुर्मुख विनायक सी.के. ३४/६० में तथा गणनाथ विनायक दुर्द्विराज गली में सी.के. ३७/१ में हैं।

मणिकर्णेश्वर (सी.के. ८/१२में), कम्बलाश्वतरेश्वर ( कमलेश्वर नामसे प्रसिद्ध सी.के. ८/१४ में ), वासुकीश्वर ( संकठा घाट के पास सी.के. ७/१५५ में ), पर्वतेश्वर ( सी.के. ७/१५० में ), गंगाकेशव तथा ललिता देवी ( ललिता घाट पर डी. १/६७ में ), जरासंधेश्वर ( मीरघाट पर डी. ३/७९ में ) वाराहेश्वर ( दशाश्वमेध घाट पर डी. १७/१११ में ), ब्रह्मेश्वर ( बाल मुकुंद के चौहट्टा में डी. ३३/६६-६७ में ), अगस्तीश्वर ( अगस्त्यकुंडा में डी. ३९/१ में ), करणेश्वर ( जंगमबाड़ी में डी. ३५/७७ में ), हरिकेश्वर ( जंगमबाड़ी में )

डी. ३५/२७३ में), वैद्यनाथ (कोदई चौकी के सामने डी. ५०/२० में), ध्रुवेश्वर  
 ( सनातनधर्म कालेज के पीछे ध्रुवेश्वर मुहल्ले में), गोकर्णेश्वर दयलू की  
 गली कोदई चौकी के सामने डी. ५०/३४ ए के समीप), हाटकेश्वर पुरानी  
 गुदड़ी में), कीकसेश्वर (हड़हामहल्ले में सीके. ४८/४५ में), भारभूतेश्वर  
 ( राजा दरवाजे पर सीके. ५४/४४ के पास), चित्रगुप्तेश्वर (वहीं सीके.  
 ५७/७७ में), चित्रघंटा देवी (लक्ली चौतरे के सामने चन्दूनाऊ की गली में  
 सीके. २३/३४ में), पशुपतीश्वर (पशुपतीश्वर मुहल्ले में सीके. १३/६६  
 में) पितामहेश्वर (कश्मीरीमल की हवेली के पीछे सीतला गली में सीके.  
 ७/६२ में), कलशेश्वर (समीप में सीके. ७/१०६ में), चन्द्रेश्वर (सीके.  
 ७/१२४ में), आत्मावीरेश्वर (सैंधिया घाट पर सीके. ७/१५८ में), विद्येश्वर  
 (नीमवाली ब्रह्मपुरी में सीके. २/४१ में), अग्नीश्वर (अग्नीश्वर घाट के  
 ऊपर सीके. २/३ में), नागेश्वर (समीप में सीके. १/२१ के पास),  
 हरिश्चंद्रेश्वर (सकठा जी के सामने सीके. ७/१६६ में), चितामणि विनायक  
 सीके. ७/१६१ में द्वार पर), सेनाविनायक (संकठा जी के मंदिर की  
 दीवाल में आले में), वशिष्ठ तथा वामदेव (सीके. ७/१६१ में), सीमा  
 विनायक (सेना विनायक के सामने उसी आले में), कश्यपेश्वर (ललिता  
 घाट के समीप सीके. ३४/१० में), त्रिसंध्येश्वर (वहीं डी. १/४० में),  
 विशालाक्षी गौरी (मीरघाट मुहल्ले में डा. ३/८५ में), घमेंश्वर (वहीं डी.  
 २/२१ में), विश्वभुजादेवी (वहीं डी. २/१३ में), आशाविनायक (वहीं डी.  
 ३/७९ में), वृद्धादित्य (वहीं डी. ३/१६ में), चतुर्वक्त्रेश्वर (सकरकन्द गली  
 में डी. ७/१९ में), ब्राह्मीश्वर (वहीं डी. ७/६ में), मनःप्रकामेश्वर (साक्षी  
 विनायक के सामने डी. १०/१० में), ईशानेश्वर (बांसफाटक गली में सी.  
 के. ३७/४३ में), चंडी चंडीश्वर (कालिका गली में डी. ७/१७ में),  
 भवानो शंकर (अन्नपूर्णा जी के समीप के राम मंदिर में काली जी के पास  
 चबूतरे पर), दुंदिराज (प्रसिद्ध), राजराजेश्वर (दुंदिराज गली में सी.  
 के. ३५/३३ में), लांगलीश्वर (खोवा बाजार में सीके. १८/४ में),  
 नकुलीश्वर (अक्षयवट में सीके. १४/२० में), परान्नेश्वर, परद्रव्येश्वर,  
 प्रतिग्रहेश्वर तथा निष्कलंकेश्वर (दुंदिराज गली में सीके. ३५/१४ में),  
 मार्कण्डेयेश्वर (वहीं सीके. ३६/१० में), अप्सरसेश्वर (ज्ञानवापी मस्जिद  
 की सीढ़ियों के सामने खिड़की में छोटा शिवलिंग), गंगेश्वर (ज्ञानवापी  
 मस्जिद के पूरबीपट्ट के नीचे स्थान पूजन), ज्ञानवापी का पूजन तथा उसके



जल से स्नान अथवा मार्जन, नंदिकेश्वर (ज्ञानवापी के उत्तर स्थानपूजन), तारकेश्वर (ज्ञानवापी के पूर्व गौरीशंकर के नीचे स्थानपूजन), महाकालेश्वर (ज्ञानवापी के आग्नेयकोण के पीपल के नीचे स्थानपूजन), दण्डपाणि (हुँदिराज गली में सीके. ३६।१० में), महेश्वर (ज्ञानवापी के नैऋत्य के पीपल के नीचे स्थानपूजन), मोक्षेश्वर (ज्ञानवापी के वायव्य कोण में स्थानपूजन), वीरभद्रेश्वर (ज्ञानवापी मस्जिद के वायव्य कोण में स्थानपूजन), अविमुक्तेश्वर (ज्ञानवापी मस्जिद की सीढ़ियों के सामने खिड़की में बड़ा शिवलिंग तथा विश्वनाथ मंदिर के घेरे में आग्नेय कोण के छोटे मंदिर में), मोदविनायक, प्रमोद विनायक, सुमुख विनायक, दुर्मुख विनायक तथा गणनाथ विनायक (प्रारंभमें कहे हुए स्थानों पर), और अंत में विश्वनाथ जी का पूजन तथा प्रार्थना ।

यह सारी यात्रा मौन होकर की जाती है । वर्तमान यात्राक्रम में भवानीशंकर के दर्शन के बाद अन्नपूर्णाजी तथा हुँदिराज का पूजन भी होता है और सोमेश्वर के बाद दाल्म्येश्वर (मानमंदिर घाट के ऊपर डी. १६/१८ में) का दर्शन भी किया जाता है ।

(ख) केदारेश्वर की अन्तर्गृह यात्रा—यह यात्रा अब इतनी प्रसिद्ध नहीं रह गई है और इस कारण इसके सभी देवताओं का ठीक पता नहीं चलता । केदारेश्वर मंदिर के समीप के यात्रा कराने वाले तीर्थ पुरोहितों की सहायता इसी कारण अपेक्षित होती है । यात्रा केदारघाट पर स्नान तथा गौरी कुण्ड के मार्जन के बाद केदार मंदिर में संकल्प कर के प्रारंभ होती है और पहले केदारेश्वर का अर्चन पूजन किया जाता है । तदुपरांत केदार मंदिर में स्थित देवताओं का पूजन क्रम से होता है । इनके नाम इस प्रकार हैं—

गणपति, दण्डपाणि, भैरव, स्कन्द, अन्नपूर्णा पार्वती, दक्षिणामूर्ति, चण्डगण, इन्द्रद्युनेश्वर, कालांजर, रनादकेश्वर, दधीचीश्वर, केदारमंदिर के दक्षिण के मकान नं० बी. ६/६६ में, नोलकंठ, तदुपरांत केदार घाट पर गौरी कुण्ड, हरंपापतीर्थ, हरम्पापेश्वर और फिर लालीघाट पर किरातेश्वर और ऊपर सड़क पर लम्बोदरविनायक (चिन्तामणि विनायक नाम से प्रसिद्ध), हनुमान घाट पर शत्रुघ्नेश्वर, भरतेश्वर, लक्ष्मणेश्वर, रामेश्वर, सीतेश्वर, हनुमदीश्वर, रुद्रभैरव, बादशाहगंज शिवालयमें स्वर्णेश्वर, स्वर्णेश्वरी, अन्नघाट पर भद्रेश्वर, लोलार्क के समीप अर्चविनायक

मंदिर में चामुंडा, समीप में चर्ममुंडा (लुत), महाकुंडा (लुत), करंभेश्वर, अर्क विनायक, पराशरेश्वर (वी. २/२१ में), उद्दालकेश्वर, अमरेश्वर (वी. २/२० में), कुंडादरेश्वर (अस्सी घाट पर बालू के नीचे), लोलार्ककुंड, शुक्लेश्वर (शुक्लेश्वर नाम से वी. १/१८५ में), जनकेश्वर (सुकुलपुर में), असिसंगम, असिसंगमेश्वर (रानी सुरसरि के मंदिर के सामने, कुरुक्षेत्र में सिद्धेश्वर (वी. ४/२८२ में), सिद्धेश्वरी देवी (लुत), स्थाणु (वी. २/२४७ में), कुरुक्षेत्र तीर्थ (सोनहटिया पोखरा या कुरुक्षेत्रतालाब), दुर्गाकुंड, दुर्गा विनायक, दुर्गाजी, कालीजी, चंड भैरव, द्वारेश्वर, द्वारेश्वरी, शूर्पकर्णेश्वर कुम्कुटेश्वर, जांगलीश्वर, तिलपर्णेश्वर, (जिस मंदिर के सामने बलि देते हैं), मुकुटेश्वर (गोवावाई के मंदिर में), वराकादेवी (पंचकौड़ी देवी) शंख धारा महल्ले में शखोदार तीर्थ (शंखधारा कुण्ड), द्वारकानाथ, द्वारकेश्वर शंकुकर्णेश्वर, वैजन्त्या महल्ले में वैजन्त्या (वैजन्त्या महादेव), कहोलेश्वर, कामाक्षा देवी, क्रोधन भैरव, बटुक भैरव, ब्रह्मपदपद्मेश्वर, लक्ष्मी महल्ले में लक्ष्मी कुशेश्वर, रामकुंड, रामेश्वर, लक्ष्मीकुण्ड महल्ले में करवी रेश्वर (डी. ५/१०० में), महालक्ष्मीश्वर, कृण्णितारा विनायक, महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती, शिल्खिचंडी, उग्रेश्वर, दशाश्वमेध घाट के समीप रुद्रसरोवर तीर्थ (अहल्यावाई घाट पर गंगाजी में), शूलतंक्रेश्वर, दशाश्व मेध तीर्थ (अहल्यावाई घाट), वन्दी देवी (डी. १७/१०० में), दशाश्वमेधेश्वर (शीतला जी के मंदिर में), गोव्यात्रेश्वर, मान्धात्रीश्वर (लाहौरी टोले में सीके. ४/१४ में), चौसट्टी देवी (चौसट्टी घाट पर), वक्रतुंड विनायक (सरस्वती विनायक नाम से राणा महल में), बंगाली टोला में पातालेश्वर (डी. ३२/११७ के द्वार पर), सिद्धेश्वर, नैऋतेश्वर (पातालेश्वर में), हरिश्चन्द्रेश्वर (पातालेश्वर में), अंगिरसेश्वर (जंगम बाड़ी डी. ३४/७७ में), पुष्पदंतेश्वर (देवनाथ पुरा में डी. ३२/१०२ में), एकदंतविनायक (वहीं समीप में), गरुडेश्वर (डी. ३१/४३ में), गरुड (वहीं), सर्वेश्वर (पांडे घाट के ऊपर), सोमेश्वर (वहीं), नारदेश्वर (नारद घाट डी. २५/१२ में), अबभ्रातकेश्वर (विभ्रातकेश्वर नाम से प्रसिद्ध) अत्रीश्वर, अनस्येश्वर, तथा अनसूयादेवी (नारदघाट के समीप डी. २५/११ में), मानसरोवर मुहल्ले में मानसरोवर (लुत), मानसरोवरेश्वर, सुरामंडिश्वर (तिलमंडिश्वर नाम से प्रसिद्ध), विमंडिश्वर, कहोलेश्वर, नर्मदेश्वर, सुरेश्वर, उग्रेश्वर, चोलेश्वर (चोलेश्वर घाट पर डी. ३१/१२ में), चित्रागदेश्वर तथा



चित्रग्रीवा देवी ( केदार जी के समीप बी. १४/१२८ में ), रुक्मांगदेवेश्वर ( चौकी घाट पर ), केदार घाट पर अम्बरीषेश्वर, तारकेश्वर ( वुर्जी के नीचे ), केदारघाट में स्नान तथा अन्त में केदार जी का षोडशोपचार पूजन । इस यात्रा का यह क्रम है । इन देवताओं में से बहुत से ऐसे हैं जिनका अब पता ठिकाना नहीं लगता ।

द्वादशज्योतिर्लिंग यात्रा—सोमनाथ ( मानमंदिर घाट डी. १६/३४ के पास ), मल्लिकार्जुन ( सिगरा में त्रिपुरातकेश्वर ), महाकाल ( वृद्धकाल मंदिर में अथवा कालभैरव के समीप के. ३१/२४ में ), ओंकारेश्वर ( पठानी टोला में ), वैद्यनाथ ( वैजन्तथा मंदिर में ), भीमशंकर ( काशीकरवट में सी के. ३१/१२ में ), रामेश्वर ( रामकुंड पर ), नागेश्वर ( वृद्धकाल में अथवा भोंसलाघाट के समीप ), त्र्यंबकेश्वर ( बड़ा देव पर डी. ३८/२१ में ), केदारेश्वर ( प्रसिद्ध ), धुसणेश्वर ( बटुकभैरव में ), तथा विश्वेश्वर का दर्शन पूजन इस यात्रा का क्रम है ।

( घ ) विष्णुभगवान की यात्राएँ—इन यात्राओं का कोई विशेषक्रम नहीं है । एकादशी को विष्णुयात्रा करनी चाहिये ऐसा पौराणिक निर्देश है और यथासम्भव अधिकाधिक विष्णुतीर्थों में दर्शन पूजन करने की परम्परा है । निम्नांकित विष्णु पीठों की अर्चना प्रचलित है:—

आदिकेशव ( वरणा संगम पर ), ज्ञान केशव ( वहीं ), प्रह्लाद केशव ( प्रह्लादघाट पर ), भृगु केशव ( गोलाघाट पर नन्दूफडिया की सीढ़ियों पर ), वामन केशव वरणा संगम पर अथवा त्रिलोचन के समीप ए. २/२६ में मधुसूदन नाम से प्रसिद्ध । नरनारायण ( महथा घाट पर बदरी नारायण नाम से ), यश्वाराह ( स्वर्णनिश्वर के समीप ए. ११/२६ में अथवा मीर-घाट पर हनुमान जी में डी. ३/७६ में ), विदार नरसिंह ( प्रह्लाद घाट पर ), गोपीगोविन्द ( लालघाट पर गौरीशंकर मंदिर में के. ४/२४ ), लक्ष्मी-वृद्धि । राजमंदिर में हनुमान जी के मंदिर में के. २०/१५६ ), शेषमाधव ( राज मंदिर में के. २०/१३७ में ), शंखमाधव ( शीतला घाट पर मंदी में ), हयग्रीव केशव ( भदौनी में आनंदमयी आश्रम के पीछे ), बिन्दुमाधव ( १ पंचगंगा घाट के ऊपर ( २ ) बुचई टोला में ( ३ ) माटकी गली में के. ३३/१८ में, ( ४ ) ब्रह्माघाट पर मठ में ), भीष्मकेशव ( वृद्धकाल मंदिर में के. २०/१६ में ), विष्णुकेशव ( खोलाक के समीप ), त्रिसुवन केशव

( दशाश्वमेध पर बंदीदेवी के मंदिर में डी. १७/१०० में ), ज्ञान माधव ( पाँचोंपांडव मंदिर में ज्ञानवापी के उत्तर फाटक के समीप सीक. २८/१० में ), श्वेतमाधव ( भीरघाट पर हनुमान जी के सामने ), प्रयागमाधव ( दशाश्वमेध घाट के ऊपर डी. १७/१११ में ), गंगाकेशव ( ललिता घाट पर डी. १/१७ में ), वैकुण्ठ माधव ( सेंधिया घाट के ऊपर सीके. ७/१६५ में ), वीरमाधव ( आत्मावीरेश्वर मंदिर के बाहरी दीवाल के आले में ), कालमाधव ( काठकी हवेली के पीछे के. ३०/४ में ), महाबल नृसिंह मछोदरी के दक्षिण कामेश्वर मंदिर में ए. २/६ ), प्रचंड नृसिंह ( अस्सी संगम के पास जगन्नाथ जी के मंदिर में ), गिरिनृसिंह ( देहली विनायक के समीप ), महाभयहरनृसिंह ( शीतला गली में पितामहेश्वर के गह्वर में सीके. ७/६२ में ), अत्युग्रनरसिंह ( गोमठ में सीके. ८/२१ में ), ज्वाला माली नृसिंह ( वरणा पार कोटवा गाँव में ), कोलाहल नृसिंह ( गोमठ के पास सीके. ८/१८६ में ), विटंक नृसिंह ( केदार जी के मंदिर में ), त्रिविक्रम ( त्रिलोचन मंदिर में ), ताम्रवाराह ( नीलकंठ मुहल्ले में सीके. ३३/५७ में ), धरणिवाराह ( दशाश्वमेध घाट पर वाराहेश्वर में मूर्ति लुप्त डी. १७/१११ में ), खर्वनृसिंह ( दुर्गाघाट पर के. २२/५३ में ) ।

( ङ ) देवीपीठों की यात्राएँ—देवीपीठों की यात्राएँ कई प्रकार की होती रही हैं यथा नवशक्ति यात्रा, नवचंडीयात्रा, नवदुर्गा यात्रा, तथा नवगौरी यात्रा तथा अष्टमातृका यात्रा परन्तु इनमें से नवगौरी यात्रा तथा नवदुर्गा यात्रा ही अब प्रचलित हैं और नवचंडी, नव शक्ति, तथा अष्टमातृकाओं में से बहुतों के स्थान भी भूल गये हैं ।

( १, नवदुर्गा यात्रा—यह यात्रा दोनों नवरात्रों में विशेष रूप से होती है और देवी कवच में वर्णन की हुई नवदुर्गा के नामानुसार प्रत्येक दिन एक देवी का पूजन होता है । इसका क्रम इस प्रकार है :—

प्रतिपदा को शैलपुत्री दुर्गा ( मढ़ियाघाट पर वरणातट पर प्रसिद्ध ), फिर क्रम से छोटी दुर्गा अथवा ब्रह्मचारिणी ( दुर्गाघाट के ऊपर प्रसिद्ध ), चित्र-वन्दा दुर्गा ( चौक के पास लक्खीचौतरे के सामने सीके. २३/३४ में ), कूष्मांडा ( बड़ी दुर्गा जी दुर्गा कुरण्ड पर ), स्कंदमाता ( जैतपुरा में वागी-श्वरी मंदिर में जे. ६/३३ में ), कात्यायिनी ( आत्मावीरेश्वर मंदिर में सी के. ७/३५ में ), कालरात्रि ( कालिका मं. डी. २/१७ में ), महागौरी



दुर्गा (अन्नपूर्णा जी के समीप के राममन्दिर में भवानी गौरी तथा अन्न-पूर्णा जी), सिद्धिदात्री (सिद्धेश्वरी नाम से प्रसिद्ध हैं सीके. ७।१२४ में) का दर्शन पूजन किया जाता है।

(२) नवगौरी यात्रा—इस यात्रा में भी नवरात्रों में प्रत्येक दिन एक गौरी पीठ का क्रमिक पूजन करने की परंपरा है। चैत्रनवरात्र में यह यात्रा विशेष रूप से होती है।

प्रतिपदा को मुखनिर्मालिका गौरी (गायघाट के ऊपर हनुमान जी के समीप) फिर क्रम से ज्येष्ठा गौरी (सप्तसागर मुहल्ले में के. ६३/२४), सौभाग्यगौरी (आदिविश्वेश्वर के घेरे में बांसफाटक पर सीके. ३८/८), शृंगारगौरी (विश्वनाथ जी में भोग अन्नपूर्णा), विशालाक्षीगौरी (मीरघाट पर डी. ३/८५, ललिता गौरी (ललिता घाट पर डी. २/६७), भवानी गौरी (अन्नपूर्णा मंदिर के पास के राममंदिर में काली जी तथा जगन्नाथ जो के बीच में प्राचीन अन्नपूर्णा हैं), मंगलागौरी (पंचगंगा घाट के समीप ऊपर के. २३/३४), और महालक्ष्मी गौरी (लक्ष्मीकुंड की लक्ष्मी जी ५२/४० में प्रसिद्ध) का दर्शन पूजन किया जाता है।

(च) भैरव यात्रा—वाराणसी में कालभैरव का विशेष स्थान है और इनकी यात्रा नित्यप्रति की जाती है। रविवार तथा मंगलवार को विशेष रूप से लोग इनका दर्शन करते हैं।

इनके अतिरिक्त आठ और भी भैरव हैं। इनकी यात्रा प्रत्येक मास की अष्टमी तथा चतुर्दशी और रविवार तथा मंगलवार को होती है। इनके वर्तमान स्थान इस प्रकार हैं :—

रुद्र भैरव (हनुमान घाट पर तथा गोमठ के चबूतरे पर सीके. १८/२१), चंडभैरव (दुर्गा जी पर दुर्गा जी के मंदिर में के. २७/२), असितागभैरव (बृद्धकाल के घेरे में सर्वेश्वर के मंदिर में के. ५२/३६), कपालीभैरव (लाट भैरव), क्रोधन भैरव (कमच्छा पर कामाक्षा देवी के मंदिर में), उन्मत्त भैरव (भीमचंडी के पास देवरा गांव में), संहार भैरव (पाटन दरवाजे के पास गली में), तथा भीषण भैरव (भूतभैरव के. ६३/२८ में) का दर्शन पूजन किया जाता है।

इनके अतिरिक्त कपल्ला मुहल्ले में बृद्ध भैरव का पित्त पीठ है।

( छ ) आदित्य यात्रा—यह यात्रा प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष की रविवार युक्त पष्ठी या सप्तमी को विशेष रूप से होती है परंतु किसी भी रविवार को इसके करने की परंपरा है। बारह आदित्यों में से एक (उत्तरार्क) तो लुप्त हो गए हैं परंतु अन्य ग्यारह आदित्यपीठों की यात्रा होती है।

लोलार्क ( भदौनी में प्रसिद्ध ), उत्तरार्क ( अलईपुरा में बकरिया कुंड पर लुप्त ), साम्बादित्य ( सूर्यकुंड के तट पर ), द्रुपदादित्य ( अक्षयवट में सी.के. ३५/२० में विश्वनाथ जी के समीप ), मयूखादित्य ( मंगलागौरी के मंदिर में के. २४/३४ ), खलोल्कादित्य ( कामेश्वर मंदिर के दक्षिण द्वार पर छोटे मंदिर में ), अरुणादित्य ( त्रिलोचन मंदिर में ), वृद्धादित्य ( मीरघाट पर हनुमान जी के मंदिर के समीप ), केशवादित्य ( वरणासंगम पर आदि केशव मंदिर में ), विमलादित्य ( जंगम बाड़ी मुहल्ले में खारीकुआ के समीप ), गंगादित्य ( ललिता घाट पर वशिष्ठेश्वर मंदिर में ), तथा यमादित्य ( यम घाट के ऊपर सीढ़ियों पर ) का दर्शन पूजन। सामूहिक यात्रा के अतिरिक्त आदित्यों की अलग-अलग कामनाओं से अलग-अलग अर्चना भी होती है। चर्मरोगों से निवृत्ति के लिये लोलार्क तथा साम्बादित्य की उपासना, जुधार्ति से छुटकारा पाने को द्रुपदादित्य की, रोग तथा दारिद्र्य से बचने को मयूखादित्य की, वृद्धावस्था के रोगों तथा कष्टों से मुक्ति पाने के लिये वृद्धादित्य की, ज्ञानप्राप्ति के लिये केशवादित्य की, कुष्ठरोग से रक्षा अथवा त्राण पाने के लिये विमलादित्य की तथा मृत्यु के समय कष्ट न पाने के उद्देश्य से यमादित्य की आराधना करने की परंपरा है।

( ज ) सप्तर्षि यात्रा—यह यात्रा अब खंडित रूप में ही हो पाती है क्योंकि मरीचीश्वर लुप्त हैं और वशिष्ठेश्वर तथा कृत्वीश्वर वरणा पार दूर दूर हैं। अत्रीश्वर भी अपने स्थान से हटकर अन्यत्र बैठे हैं। फिर भी श्रद्धालु लोग ऋषि पंचमी को इनकी यात्रा करते हैं।

अत्रीश्वर ( नारदघाट पर डी० २५/११ ) मरीचीश्वर ( नागकुआ के समीप स्थान पूजन ) पुलहेश्वर ( स्वर्गद्वारी पर सी.के. १०/१६ के बचतरे पर ), पुलस्त्येश्वर ( स्वर्गद्वारी पर सी.के. ३३/४३ ), अंगिरसेश्वर ( जंगमबाड़ी में डी० ३५/७७ अथवा स्वर्गद्वारी पर मकान नं० सी.के. १०/१६ में ), वशिष्ठेश्वर ( वरणा संगम पार अथवा ललिताघाट पर गंगादित्य के मंदिर में कुछ लोग संकटाघाट पर वशिष्ठ नागदेव मंदिर में वशिष्ठेश्वर का पूजन



करते हैं ), तथा कुल्नीश्वर ( कोनियाघाट के पास वरणापार पाकर के वृक्ष के नीचे ) इस प्रकार इन सबका अर्चन पूजन होता है ।

( ॐ ) सप्तपुरी यात्रा—वाराणसी में सातोंपुरियों की उपस्थिति पुराणा-श्रित मानी गई है । उनके स्थान निम्नांकित हैं :—

शंखूधारा तालाब के समीप द्वारका, विन्दुमाधव के पास विष्णुकांची, रामकुण्ड पर अयोध्या, असीसंगम पर हरद्वार, कृत्तिवासेश्वर की मस्जिद से वृद्धकाल तक उज्जयिनी, बकरियाकुण्ड से उत्तर वरणा तट तक मथुरा, तथा विश्वेश्वर के समीप काशी तथा शिवकांची की यात्रा होती है । कुछ लोग ललिता घाट पर काशी देवी के समीप काशी की यात्रा मानते हैं ।

समन्वित यात्रा—ऊपर कही हुई यात्राएं विशेष देवताओं की पृथक् पृथक् आराधना का स्वरूप हैं । इनके अतिरिक्त वाराणसी में तीन यात्राएं ऐसी हैं जिनमें सभी देवताओं के दर्शन पूजन होते हैं । इनमें से उत्तरदिक् यात्रा अथवा उत्तरमानसयात्रा तथा दक्षिणदिक् यात्रा अथवा दक्षिणमानस यात्रा का पौराणिक आधार नहीं मिलता परंतु कम से कम पाँच सौ वर्षों से वे प्रचलित हैं । तीसरी पंचक्रोशीयात्रा ब्रह्मवैवर्त पुराण के आधार पर होती है और इसका प्रचलन कम से कम एक हजार वर्ष से होना प्रमाणित है ।

( १ ) उत्तरदिक् यात्रा अथवा उत्तरमानसयात्रा—यह यात्रा मुक्ति मंडप में संकल्प लेकर प्रारम्भ होती है और मोद विनायक, प्रमोद विनायक सुमुख विनायक, दुमुख विनायक, गणनाथ विनायक, तथा दंडपाणि और दुर्द्वाराज की पूजा के बाद विश्वेश्वर का षोडशोपचार पूजन किया जाता है । तदनन्तर निम्नलिखित क्रम से यात्रा चलती है :—

मोदादि विनायक का पता ठिकाना विश्वेश्वर की अन्तर्गृह यात्रा में ऊपर दिया जा चुका है । ज्ञानवापी ( प्रसिद्ध ), लांगलीश्वर ( खोवाबाजार सी के. २८/४ ) पशुपतीश्वर ( नंदनसाह महल्ले के पास सी के. १३/६६ ), पितामहेश्वर ( कश्मीरी मल की हवेली के पास शीतला गली में सी के. ७/६२ ), कलशेश्वर ( वहीं सी के. ७/१०६ ), चन्द्रकूप, चन्द्रेश्वर, सिद्धेश्वरी देवी तथा सिद्धेश्वर ( समीप में सी के. ७/१२४ ), विद्येश्वर ( समीप में ही नीमवाली ब्रह्मपुरी में सी के २/४१ ), कलिकालेश्वर ( सी के. ७/१२४ ), आत्मावीरेश्वर, अगारेश्वर, तथा ब्रह्मेश्वर ( सी के. ७/१५८ ), परमेश्वर ( सी के. ७/१५८ ), वासुकीश्वर ( सी के. ७/१५५ ), बृहस्पतीश्वर ( सी के. ७/१६३ ), वशिष्ठ-

वामदेव ( सी के. ७/१६१ ), याज्ञवल्क्येश्वर ( वहीं ), कृष्णेश्वर ( संकठा  
 जी के मन्दिर की बाहरी दीवाल में हरिश्चन्द्रेश्वर के सामने ), हरिश्च  
 न्द्रेश्वर ( सी के. ७/१६६ ), यमेश्वर ( यमघाट पर ), यमतीर्थ ( यमघाट  
 पर गंगाजी में ), संकठाजी ( प्रसिद्ध ), विन्ध्यवासिनी देवी ( समीप में ),  
 नागेश्वर ( भोंसलाघाट के ऊपर सी के. १/२१ से सटे मन्दिर में ), उप-  
 शान्तेश्वर ( समीप में सी के. २/४ ), अग्नीश्वर ( सी के. २/३ ), गमस्ती-  
 श्वर तथा मंगला गौरी ( के. २४/३४ ), व्यंकटेश्वर ( वालाघाट पर लक्ष्मण  
 वाला नाम से प्रसिद्ध ), विन्दुमाधव ( पंचगंगाघाट के ऊपर ), पंचनद  
 ( पंचगंगा घाट पर गंगाजी ), पंचगंगेश्वर ( के. २२/११ ), दुग्ध विनायक  
 ( दूधविनायक नाम से प्रसिद्ध ), दधिविनायक, घृत विनायक, मधु विनायक,  
 शर्करा विनायक, ( वहीं समीप में ), आमर्दकेश्वर ( काठ की हवेली के पीछे  
 के. ३०/४ ), कालमाधव ( वहीं ), पापभक्षण समीप में ( के. ३२/३६ ),  
 कालभैरव ( प्रसिद्ध ), दंडपाणि भैरव ( समीप में के. ३१/४६ ), कालेश्वर  
 ( वहीं ), महाकालेश्वर ( के. ३२/२४ ), घनघान्येश्वर ( रतनफाटक के  
 समीप ), त्रिलोचन ( प्रसिद्ध ए. २।८० ), कामेश्वर ( मछोदरी के दक्षिण  
 ए. २।६ ), मत्स्योदरी तीर्थ ( मछोदरी का पोखरा ) ओंकारेश्वर ( पठानी  
 टोला में ए. ३१।२३ ), तारकुंड तीर्थ ( लुत ), सुमन्वीश्वर ( हनुमान फाटक  
 के समीप तुलसीदास जी के मंदिर में ), ऋणमोचन तीर्थ ( लड्डूगड्ढा ), पाप-  
 मोचन तीर्थ ( नौवा पोखरा ), कपालमोचन तीर्थ ( लाटभैरव का तालाब ),  
 कुलस्तंभ ( लाटभैरव प्रसिद्ध ) ऐतरणी तीर्थ ( वैतरणी से पश्चिम ),  
 वैतरणीतीर्थ ( वहीं प्रसिद्ध ), शैलेश्वर ( मदिद्याघाट के वरणातट पर ),  
 शैलपुत्री दुर्गा ( वहीं ), हूँडनमुंडनगण ( वहीं शैलपुत्री के मंदिर में ),  
 उत्तरार्ककुंड ( बकरिया कुंड ), उत्तरार्क ( बकरिया कुंड के समीप स्थान  
 पूजन ), कर्कोटक तीर्थ ( नागकुंआ प्रसिद्ध ), ज्वरहरेश्वर ( बागेश्वरी के  
 दक्षिण जैतपुरा में जे. ६।८४ ), सिद्धेश्वर ( वहीं ) बागेश्वरी देवी ( प्रसिद्ध  
 जे. ६।३३ ), शिवगंगा तीर्थ ( ईश्वरगंगी का तालाब ), अग्नीश्वर  
 ( बागेश्वर नाम से प्रसिद्ध के. ६६।४ ), जैगोपज्यगुहा ( बागेश्वर के  
 दक्षिण के मठ में के. ६६।३ ), मृत्युंजय, वृद्धकालेश्वर, महाकालेश्वर,  
 दक्षेश्वर, धन्वन्तरीश्वर तथा असितांग भैरव, वृद्धकाल के घेरे में के. ५२।३६ )  
 मणिप्रदीप कुंड ( लुत ), मणिप्रदीप नाग ( लुत ), कृत्तिवासेश्वर  
 ( रत्नेश्वर के पूर्व के. ४१।२३ ), रत्नेश्वर ( वृद्धकाल का सड़क पर के.



५३।४० में ), शंख चूड़ तीर्थ ( लुप्त ), अम्बिकेश्वर ( रत्नेश्वर के पश्चिम के. ५३।३८ में मणिकेश्वर नाम से प्रसिद्ध ), हंसतीर्थ ( हरतीर्थ का पोखरा ), मंदाकिनी तीर्थ ( मैदागिन का पोखरा ), हृषीकेश ( मध्यमेश्वर के समीप ), मध्यमेश्वर ( मैदागिन के उत्तर के. ५३।६३ के सामने ), महाराजविनायक ( बड़े गणेश प्रसिद्ध के. ५८।१०१ में ), जम्बुकेश्वर ( बड़े गणेश के द्वार पर के. ५८।१०३ ), सिद्धयष्टकेश्वर ( वहीं के. ५८।१०३ ), कन्दुकेश्वर ( भूतभैरव पर के. ६३।२६ ), भूतभैरव ( प्रसिद्ध के. ६३।२८ ), ज्येष्ठागौरी समीप में के. ६३।२४ ), ज्येष्ठेश्वर ( समीप में के. ६३।१४४ ), ज्येष्ठ विनायक ( वहीं ), चतुःसमुद्रकूप ( नखास की सड़क पर ), काशी देवी ( प्रसिद्ध ), घंटाकर्णेश्वर ( कर्णघण्टा तालाब के किनारे कंठेश्वर नाम से के. ६०।१७ ), घंटाकर्ण तीर्थ ( कर्णघंटा तालाब ), महोदरगण ( महावीर जी के नाम से वहीं ), द्वारविनायक ( ज्ञानवापी के उत्तर पाँचों पांडव मंदिर में सी के. २८।१० ), तदनंतर दुर्गिराज, अन्नपूर्णा, तथा विश्वनाथ के पूजन के बाद यात्रा समाप्त होती है। इस यात्रा में विश्वेश्वर के उत्तर के देवताओं तथा तीर्थों की यात्रा होती है।

( २ ) दक्षिणदिक् यात्रा अथवा दक्षिणमानसयात्रा—यह यात्रा भी मुक्तिमंडप में सकल्प लेकर तथा मोद, प्रमोद, सुमुख, दुःख तथा गुणतीर्थ विनायकों और दंडपाणि एवं दुर्गिराज का पूजन करके प्रारंभ होती है और सबसे पहले विश्वनाथ जी का पूजन किया जाता है। तदनंतर निम्नांकित क्रम से यात्रा चलती है :—

अविभक्तेश्वर ( विश्वनाथ मंदिर में ), शुक्रेश्वर ( कालिकागली में डी० ८।३० ), शुक्रकूप ( वहीं ), महाकाली ( समीप में डी० ८।१७ ), चंडी चंडीश्वर ( वहीं डी० ८।२७ ), धर्मेश्वर ( मीरघाट महल्ले में डी० २।२१ ), धर्मकूप ( वहीं ), विश्वबाहुका देवी तथा दिवोदासेश्वर ( वहीं डी० २।१९ ), विशालाक्षी गौरी ( समीप में डी० ३।८५ ), आशा विनायक ( समीप में हनुमान जी के मंदिर में डी० ३।७६ ), वृद्धादित्य ( वहीं समीप में डी० ३।१६ ), आनन्द भैरव ( वहीं समीप में ), त्रिपुरा भैरवी ( प्रसिद्ध डी० ५।२४ ), वाराही देवी ( मीरघाट महल्ले में डी० १६।८४ ), रामेश्वर ( मानमंदिर घाट के ऊपर डी० १६।३४ के समीप ), सोमेश्वर ( वहीं ), वाल्म्येश्वर ( समीप में डी० १६।२८ ), लक्ष्मीनारायण ( समीप में ), प्रयाग माधव ( दशाश्वमेधघाट के ऊपर डी० १७।११ ), सकर्षण तीर्थ ( मानमंदिर

घाट पर गंगाजी में ), दशाश्वमेध तीर्थ (प्रसिद्ध), शूलतंकेश्वर (दशाश्वमेध घाट पर), वाराहेश्वर (वहीं डी० १७।१११ में), दशाश्वमेधेश्वर (वही शीतलाजी के मन्दिर में वहीं पर), बन्दीदेवी (वहीं डी० १७।१००), शीतला देवी (प्रसिद्ध), चतुःषष्टि योगिनी (राणा महल के समीप), कृष्णगोपाल (समीप में), पातालेश्वर (बंगालीटोला में डी० ३२।११७ के द्वार पर), पुष्करदन्तेश्वर (डी० ३२।१०२), गरुडेश्वर (देवनाथपुरा में डी० ३१।३६ ए), तिलमाडेश्वर (पांडेहवेली महल्ले में प्रसिद्ध), रेवातीर्थ (रेवड़ी तालाब) मानसरोवर तीर्थ (लुप्त), हंसेश्वर (मानसरोवर महल्ले में), क्षेमेश्वर (क्षेमेश्वर घाट के ऊपर वी० १४।१२), रुक्मांगदेश्वर (चौकीघाट पर), चित्रग्रीवा देवी (केदारजी के समीप वी० १४।११८), गौरीकुंड (केदार घाट पर), केदारेश्वर (प्रसिद्ध), चिंतामणि गणेश (लालीघाट के ऊपर सड़क पर), हनुमान जी (हनुमानघाट पर), हनुमदीश्वर (वहीं मदी में), रामेश्वर (वहीं), रामचन्द्रजी (वहीं समीप में), सिद्धकुंड (नई कौलोनी की गड्ढी), कूटदन्त विनायक (कृमिकुंड पर), स्वप्नेश्वरी तथा स्वप्नेश्वर (बादशाह गंज में अथवा लोलार्क के उत्तर सिंहवाहिनी के मन्दिर में), हयग्रीव तीर्थ (लुप्त), हयग्रीव केशव (मां आनन्दमयी के अस्पताल के पीछे), पाराशरेश्वर (लोलार्क पर डी० २।२१), अमरेश्वर (वहीं डी० २।२०), अर्क विनायक (लोलार्क के पूर्व कगार पर), लोलार्क कुंड (प्रसिद्ध), असिसंगम (अस्सीघाट के पास), असिमाधव (वहीं), पुष्कर तीर्थ (प्रसिद्ध), स्थाणु (कुरुक्षेत्र महल्ले में वी० २।४७ में अथवा कुरुक्षेत्र के तालाब के समीप), रणस्तंभ (वहीं), महामाया देवी (दुर्गाकुंड पर), कुक्कुटेश्वर (दुर्गाजी के घेरे में), द्वारेश्वर तथा द्वारेश्वरी (वहीं जलहरेश्वर जलहरेश्वरी नाम से प्रसिद्ध), दुर्गा कुंड तीर्थ, दुर्गाजी (प्रसिद्ध), वराटिका देवा (पंचकौड़ी देवी) तथा मुकुट कुंड (गोवाबाई के कुंड), मुकुटेश्वर (लुप्त), द्वारावती तीर्थ (शखू-धारा का तालाब), द्वारकेश्वर (वहीं), दुर्वासा ऋषि (समीप में), कृष्ण कृष्णिणी (वहीं), वैद्यनाथ (वैद्यनत्या नाम से प्रसिद्ध) कामाक्षादेवी (वहीं समीप में), बटुक भैरव (वहीं प्रसिद्ध), रामेश्वर (रामकुंड पर डी० १५।११५), लवेश्वर तथा कुशेश्वर वहीं समीप में, महालक्ष्मी तीर्थ (लक्ष्मी कुंड), महालक्ष्मी (प्रसिद्ध), सूर्यकुंड प्रसिद्ध, मांवावित्त्य (वहीं), विष्णुविनायक (वहीं), दीप्ताशक्ति (समीप में), गोदावरी तीर्थ (लुप्त),



गौतमेश्वर [ काशिराज के शिवालय के पीछे की ओर डी० ३७।३३ ],  
त्र्यंबकेश्वर [ बड़ादेव महल्ले में डी० ३८।२१ में त्रिलोकनाथ नाम से  
प्रसिद्ध ], समद्वेश्वर [ कोतवाल पुरा सी के० ३७।३२ के बाहर सड़कर पर  
छोटे मन्दिर में ], कोटिलिंगेश्वर [ साक्षीविनायक के समीप डी० १०।४६  
में ], मनः प्रकामेश्वर [ वहीं डी० १०।५० में ], साक्षीविनायक 'प्रसिद्ध',  
हुंढिराज, नैमिषारण्य तीर्थ । अपारनाथ मठ में कूप सी के० ३७।१२ में ],  
अन्नपूर्णाजी [ प्रसिद्ध, तथा विश्वनाथ का पूजन करके यात्रा समाप्त  
होती है ।

( ८ ) विघ्नेश्वर अथवा विनायक यात्रा—इन सभी यात्राओं से  
बड़ी छुप्पन विनायक यात्रा है जिसमें विश्वनाथ जी की सात प्रदक्षिणा होती  
है और प्रत्येक आवरण में स्थित आठ विनायकपीठों का दर्शन पूजन किया  
जाता है । इन आवरणों का व्यास निरन्तर छोटा होता जाता है और अन्तिम  
अर्थात् सातवें आवरण में प्रायः विश्वेश्वर मन्दिर की ही प्रदक्षिणा होती है ।

यात्रा मणिकर्णिका में स्नान करके और ज्ञानवापी का मार्जन लेकर  
हुंढिराज के षोडशोपचार पूजन से प्रारम्भ होती है । तदुपरांत मणिकर्णिका  
के समीप सिद्धविनायक का पूजन करके दक्षिणावर्त क्रम से वाराणसी क्षेत्र  
की प्रदक्षिणा करते समय आठों दिशाओं में स्थित विनायकों के प्रथम  
आवरण का पूजन निम्नांकित क्रम से होता है :—

सिद्ध विनायक ( मणिकर्णिकाघाट पर ), अर्कविनायक ( लोलार्क के पास  
भदौनी में ), दुर्गा विनायक ( दुर्गाकुण्ड पर दुर्गाजी के मन्दिर के पीछी टीले  
पर ), भीमचंड विनायक ( पंचक्रोशी के मार्ग पर भीमचंडी में ), देहली विनायक  
( चौखडी गांव में ), उदंडविनायक ( रामेश्वर के पास मुहली गांव में ),  
पाशपाणि विनायक ( सदर बजार में ), खर्वविनायक ( वरणा संगम के  
पास आदि केशव के पिछवाड़े ) यहाँ प्रथम आवरण समाप्त हुआ । तदनंतर  
यात्रा दक्षिणावर्त चलती रहती है और केदार जी के दक्षिण लाली घाट  
के ऊपर सड़क पर लम्बोदर विनायक [ चिन्तामणि विनायक नाम से  
प्रसिद्ध ], कूटदन्त विनायक [ कृमिकुण्ड पर ], शालकटंकट विनायक  
[ महुआडीह तालाब के किनारे ], कृष्णविनायक [ चंडीश्वर के पास फुल-  
बरिया गांव में ], मुंडविनायक [ चंडी देवी के मन्दिर में सदरबाजार में ]  
विकट विनायक [ भूषांडी देवी के मन्दिर के पिछवाड़े में ] १२।१३४

में ], राजपुत्र विनायक [ राजघाट किले में कुएँ के सामने ], तथा प्रणव विनायक [ त्रिलोचन घाट पर हिरण्यगर्भेश्वर की मढ़ी में ] के पूजन से दूसरा आवरण समाप्त होता है । पुनः राणामहल के पास चक्रतुंड विनायक [ सरस्वती विनायक नाम से डी० २०।४ में प्रसिद्ध ] एकदन्त विनायक [ बंगा नी टोला में पुष्पदंतेश्वर में डी० २२।१०२ ], त्रिमुख विनायक [ सिगरा म त्रिपुरान्तकेश्वर के टीले पर डी० ५६।६५ में ], पचास विनायक [ पिशाच मोचन पर ], हेरम्ब विनायक पिशाचमोचन के उत्तर वाल्मीकि के टीले पर ], विघ्नराज विनायक [ चित्रकूट के तालाब के पास ], वरद विनायक [ प्रह्लाद घाट के उत्तर सड़क पर ए० १३ ३९ के बाहर ], तथा मोदकप्रिय विनायक [ आद महादेव मन्दिर में ए० ३।९२ में ], के पूजन से तीसरा आवरण समाप्त होता है । तदनन्तर दशाश्वमेध घाट पर अभयद विनायक [ शूलतंकेश्वर के मन्दिर में डी १७।१११ के नीचे ], सिंहतुंड विनायक [ बालमुकुन्द के चौहट्टा में डी. ३३।६६-६७ में ], कृण्णितास विनायक [ लक्ष्मी कुण्ड पर डी. ५३।३८ में ], क्षिप्रप्रसाद विनायक [ पतरकुण्डा पर पित्रीवर के मन्दिर में सी. १८।४७ में ], चिन्तामणि विनायक [ ईश्वर-गंगी के पास यागेश्वर मन्दिर में के. ६१।४ में ], दंतहस्त विनायक [ बड़े गणेश के घेरे में के० ५८ १०१ में ], पिचिडिल विनायक [ प्रह्लाद घाट पर ए. १०।८० में फाटक के भीतर ], तथा उदण्डमुण्ड विनायक [ त्रिलोचन के घेरे में वाराणसी देवी के मन्दिर में ए. २।८० में ], के पूजनोपरांत चौथा आवरण समाप्त होता है । पुनः मानमन्दिर घाट पर सोमेश्वर मन्दिर के द्वार पर स्थूलदंत विनायक डी० १६।३४ के पास ], कलिप्रिय विनायक [ साक्षी विनायक पर मनःप्रकामेश्वर मन्दिर में ], द्विदुड विनायक [ सूर्यकुण्ड पर साम्बादित्य मन्दिर की दालान में ], ज्येष्ठ विनायक [ सप्तसागर में ज्येष्ठ श्वर मन्दिर में के० २२।१४४ में ], गज विनायक [ राजादरवाजे के पास भारभूतेश्वर में सी के. ५४।४४ के पूर्व में ], कालविनायक [ राम घाट की सीढ़ी पर के. २४.१० के द्वार पर ], नागेश विनायक [ महथाघाट पर नागेश्वर मन्दिर में अथवा भोंसलाघाट के समीप नागेश्वर मन्दिर में ] की अर्चना के साथ पांचवां आवरण समाप्त हुआ । तदनन्तर मणिकर्णिका पर पुलिस चौकी के पास । सी के० १०।४८ के सामने ] मणिकर्ण विनायक, आशा विनायक भीरघाट पर हनुमान जी के मन्दिर में डी० २०।४८ में ], सृष्टि विनायक [ कालिका गली में डी० ८।२ की बाहरी दीवाल में ], यक्ष



विनायक [ बाबू रुद्रप्रसाद के मन्दिर के पास घर में सी के० ३७/२६ में ], गजकर्ण विनायक [ बांसफाटक पर सिनेमा के पिछवाड़े गली में ईशानेश्वर के मन्दिर में सी के० ३७/४३ में ], चित्रघट विनायक [ रानीकुंआ पर सी के० २३/२५ के पास संगमरमर के मन्दिर में, अथवा चौक में जगन्नाथ दास बलमदरदास की दूकान के चबूतरे पर सी के० ३६/७४-७६ में ], तथा स्थूलजंघ विनायक [ रानीकुंआ के मन्दिर में चित्रघट विनायक के पास की दूसरी मूर्ति ] के पूजन दर्शन के बाद छटा आवरण समाप्त होता है। इसके बाद काशीकरवट में मोद विनायक [ सी के० ३२/१२ में ], प्रमोद विनायक [ सी के० ३१/१६ में ], सुमुख विनायक [ नेपाली खपड़े में गली में सी के० ३५/८ में ], दुमुख विनायक [ सी के० ३४/६० में नेपाली खपड़े में ], गणनाथ विनायक [ ढुंढिराज गली में सी के० ३७/१ में ], ज्ञान विनायक [ लांगलीश्वर मन्दिर में बाहर की कोठरी में सी के० २८/४ में ] तथा अविमुक्त विनायक [ विश्वनाथ जी के घेरें के नेत्रस्थकोण के छोटे मन्दिर में त्रिसूक्त गौरी के बगल में ], की पूजा अर्चना करने के बाद सप्तम आवरण समाप्त होता है। तदनंतर विश्वनाथ तथा ढुंढिराज का पूजन करके यात्रा समाप्त होती है।

( ठ ) पंचक्रोशी यात्रा—काशीक्षेत्र में किये हुए पातकों के नाश के लिये इस यात्रा को अवश्य करना चाहिये । सम्भव हो तो वर्ष में दो बार ( दक्षिणायन तथा उत्तरायण सूर्यमें ) नहीं तो कम से कम एक बार तो अवश्य ही करना चाहिये—ऐसा ब्रह्मवैवर्त पुराण के काशीरहस्य में कहा गया है । इस दृष्टिसे काशी की सभी यात्राओं से बढ़कर इस यात्रा का माहात्म्य है । यह यात्रा पांच दिन या छह दिनों में पूरी होती है और इन दिनों के विश्रामस्थल निर्धारित हैं । पहले दिन कदमेश्वर ( कंदवा ) में, दूसरे दिन भीमचण्डी में, तीसरे दिन रामेश्वर में, चौथे दिन शिवपुर में, तथा पाँचवें दिन कपिलधारा में रात्रिवास होता है । सशक्त लोग शिवपुर में नहीं रुकते और चौथे दिन ही कपिलधारा पहुँच कर वहीं रात्रिवास करते हैं । अन्तिम दिन प्रातःकाल नृपमध्वज का पूजन करके यात्रा का अन्तिम चरण प्रारम्भ होता है जो विश्वेश्वर में तथा मुक्तमण्डप में समाप्त होता है । पहले दिन प्रायः आठ मील, दूसरे दिन भी प्रायः आठ मील, तीसरे दिन बारह मील, चौथे दिन शिवपुर तक प्रायः १ या १.५ मील, पाँचवें दिन भी बारह मील, चौथे दिन शिवपुर तक प्रायः १ या १.५ मील, पाँचवें दिन भी

यही ८ या मील की यात्रा होती है। अन्तिम दिन ६ मील के लगभग चलना होता है। कुछ लोग पूरी यात्रा एक ही दिन में करते हैं।

यह यात्रा काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा है जो स्वयं शिवलिंग रूप माना गया है। 'पंचक्रोशात्मकलिंगम्'। इस यात्रा में ब्रह्मचर्यात्मक जीवन अपेक्षित है। मनको स्थिर तथा शिवमय करने का प्रयास होना चाहिये। यात्राकाल में मौन रह कर भगवान का ध्यान करता रहे अथवा उनका नाम लेता रहे। एकमोजी रहना श्रेयस्कर होता है। इस यात्रा का मार्ग निश्चित है। सड़क के बाईं ओर चले और सड़क पर या दाहिनी ओर मूत्रोत्सर्ग इत्यादि न करे। तिलमर मार्ग भी न छोड़े। इस यात्रा की विधि नीचे लिखी जाती है :—

यात्राकाल—आश्विनादि तीन मास अथत्ति आश्विन, कार्तिक, तथा मार्गशीर्ष और माघादि चार मास अथत्ति माघ, फाल्गुन चैत्र तथा वैशाख के महीनों में यात्रा करने का अधिक माहात्म्य है परंतु जिस समय भी मन में भद्रा उत्पन्न हो उसी समय यह यात्रा करनी चाहिये। शुभस्तु शीघ्रम्।

आश्विनादिषु मासेषु त्रिषु पार्वति सर्वदा।

प्रदक्षिणा प्रकर्तव्या क्षेत्रस्यापापकाक्षिभिः ॥

माघादि चतुरोमासाः प्रोक्ता यात्राविधौ नृणाम्। [ ब्र० वै० पु० १०।६-७ ]

यथाकथा च देवेशि पंचक्रोश प्रदक्षिणाम्।

कुर्यादेव न मासादि चिन्तयेदमकोविदः ॥ [ ब्र० वै० पु० १०।८४-८५ ]

यात्रा विधि—यात्रा के एक दिन पहले प्रातः काल गंगा स्नान करके मुक्तिमंडप में प्राणायाम करने के बाद देशकाल का वर्णन करके निम्नांकित संकल्प करे—“काशी वाराणस्य विमुक्तान्तर्गृह्यारव्यचतुर्विधक्षेत्रं कृतं समस्त पापक्षयार्थं श्वः करिष्यमाण पंचक्रोशयात्रन्तर्भूतं दुंदिराजपूजनं पंचगव्य प्राशनं च करिष्ये”। तदनन्तर दुंदिराज का पंचोपचार पूजन करे और फिर ज्ञानवापी में स्नान तथा पंचगव्य प्राशन करे। संभव हो तो उस दिन उपवास करे, नहीं तो हविष्यान्न का भोजन करे। यात्रा के दिन प्रातःकाल गंगा स्नान करके अन्नपूर्णा दुंदिराज तथा विश्वनाथ का दैनिक पूजन करके फिर अन्नपूर्णा तथा विश्वनाथ का यात्रा के सम्बन्ध में पूजन करे। विश्वेश्वर का पूजन करने के बाद उसी स्थान पर लक्ष्मीपूजा करके लक्ष्मीपूजा का पूजन करे। उसका मंत्र यह है :—



मनोन्मनि महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।  
 अनुशान्देहि यात्रार्थन्त्वत्प्रसादात्करोम्यहम् ॥ (वाशिष्ठलिङ्गपुराण)

इसके बाद अन्नपूर्णा का पूजन करने के बाद वहीं पर सुवनेश्वरी का पूजन करे ।

सुवनेशिमहाविद्ये अन्नपूर्णे महेश्वरि :

अनुशान्देहि यात्रार्थन्त्वत्प्रसादात्करोम्यहम् ( वाशिष्ठ-लि० पु० )

यदि संभव हो तो उस समय सौभाग्यवती ब्राह्मणियों को अन्नदान करे ।  
 इसके बाद मुक्तिमंडप में बैठकर संकल्प तथा प्रतिज्ञा करे ।—

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः से प्रारम्भ करके देशकाल का वर्णन करके अपने नाम तथा गोत्र का उच्चारण करके “मम काशीवाराणस्यविमुक्तान्तर्गृहाख्य-चतुर्विधक्षेत्रकृतशानाशनकामाकामसकृदसकृत्कायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिक-स्पृष्टास्पृष्ट-मुक्तामुक्त-प तापीत-सकलोपपातकलधुपातकसंकलीकरणमलिनीकरण-पात्रीकरणजातिभ्रंशकरप्रकीर्णकपातकानाम्मध्ये सम्भवितानां निरासार्थं पंच-क्रोशयात्रामहं करिष्ये । इस संकल्प के बाद—

काश्याम्प्रजातवाक्कायमनोजनितमुक्तये ।

ज्ञाताज्ञातविमुक्त्यर्थम्पातकेभ्योऽहिताय च ॥

पंचक्रोशात्मकं लिंगम् ज्योतिरूपं सनातनम् ।

भवानीशंकराम्यां च लक्ष्मीश्रीशविराजितम् ॥

दुर्गिराजादिगणपैः षट्पंचाशद्भिरावृतम् ।

द्वादशादित्यसहितं नृसिंहैः केशवैर्युतम् ॥

रामकृष्णत्रययुतं कूर्ममत्स्यादिभिस्तथा ।

अवतारैरनेकैश्च युतम्विष्णोः शिवस्य च ॥

गौर्यादिशक्तिभिर्युक्तं क्षेत्रं कुर्यात्प्रदक्षिणम् ।

यद्वाजलिः प्रार्थयति महादेवममहेश्वरीम् ॥

पंचक्रोशस्ययात्राम्भै करिष्ये विधिपूर्वकम् ।

प्रीत्यर्थं तव देवेश सर्वाद्यौघप्रशान्तये ॥

यह प्रतिज्ञा मौन होकर करे और विश्वनाथ को फिर फिर प्रणाम करे ।  
 फिर दुर्गिराज से प्रार्थना करे :—

दुर्गिराजगणेशानमहाविघ्नौघनाशन ।

पंचक्रोशस्ययात्रार्थं देवाणां कृपया विमो ॥

तदनन्तर विश्वेश्वर की तीन परिक्रमा करके और दंडवत् प्रणाम करके प्रार्थना करे :—

करिष्ये विश्वनाथाहं पंचक्रोशप्रदक्षिणम् ।

आज्ञां देहि महादेव सर्वं पापापनुत्तये ।।

फिर मोद ( सी के. ३१/१२ ), प्रमोद ( सी के. ३१/१६ ), सुमुख ( सी के. ३५/८ ), दुर्मुख ( सी के. ३४/६० ), तथा गणनाथ ( सी के. ३७/१ ) विनायकों को प्रणाम तथा उनका पूजन करके दंडपाणि ( सी के. ३६/१० ) तथा विश्वेश्वर के पश्चिम द्वार पर स्थित कालमैरव का पूजन करे । इसके बाद मौनरहकर मणिकर्णिका को जाय और वहाँ विधिपूर्वक स्नान करके मणिकर्णेश्वर ( सी के. ८/१२ ) का पूजन करे । फिर लौटकर सिद्धिविनायक ( सी के. ६/१ ) का पूजन करके गंगा जी के किनारे किनारे यात्रा प्रारम्भ करे ।

ललिताघाट पर पहले काशीदेवी की पूजा करे । उनका ध्यान इस प्रकार है

“श्यामा षोडश वार्षिकी सुकरुणामूर्तिर्दधाना वरम् ,

हस्ताभ्यामभयं च विश्वजननो विद्येति सा गीयते ।

या दृष्टा स्मरणंगतापि सततं या कीर्तिता सस्तुता,

या स्पृष्टा नृभिरात्मतत्त्वममलं दद्याद्भुवं काशिका ॥

ॐ ह्रीं काशिकायै नमः इस मंत्र से पंचोपचार अर्पण करके प्रणाम करे और फिर ललिता देवी तथा गंगकेशव का पूजन करके आगे बढ़े । मीरघाट पर गंगा जी में जरासंधेश्वर का पूजन करके ऊपर हनुमान जी ( डी. ३/७६ ) में जो जरासंधेश्वर नामक शिवलिंग है उसका पूजन करके पुनः गंगा तट से आगे बढ़े । मानमंदिर घाट पर सोमेश्वर ( डी. १६/३४ ) तथा दाल्म्येश्वर ( डी. १६/२१ ) की अर्चना करके फिर नोचे उतरे और दशाश्वमेध घाट पर शूलटंकेश्वर, आदिवाराह ( डी. १७/१११ ), दशाश्वमेधेश्वर तथा बन्दी देवी ( डी. १७/१०० ) का पूजन करता हुआ आगे चलकर पांडेयघाट पर सर्वेश्वर की पूजा करे । पुनः केदार घाट पर केदारेश्वर की पूजा करे । अग्निपुराण के अनुसार वहाँ स्नान भी करे । हनुमानघाट पर हनुमदीश्वर का पूजन करके असिसंगम पर संगमेश्वर ( डी. १/१७७ ) की पूजा करने के उपरांत लोलार्क की अर्चना करे और वहीं अर्कविनायक की पूजा करके पुनः असीसंगम को लौट जाय, यहाँ से आगे पंचक्रोशी मार्ग से चलकर असीसंगम पर पहुँचे।



लगा है वहां से दुर्गाजी को जाय। वहां दुर्गाकुंड में स्नान करके दुर्ग विनायक के पूजनोपरांत दुर्गाजी की पूजा करे। वाशिष्ठ लिंग पुराण के अनुसार दुर्गाजी के पूजन के बाद रेणुका देवी की भी पूजा करे। शास्त्रीय परिपाटी के अनुसार वहीं पहला विभ्राम होता है। वहां श्राद्ध करके ब्राह्मणों को मिठाई खीर लड्डू इत्यादि भोजन करवावे। रात्रि को जागरण कीर्तन तथा पुराण श्रवण करे, दान भी दे। यदि वहां ठहरे तो दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान पूजन करके दुर्गा जी की पुनः पूजा करके प्रार्थना करे।

जयदुर्गे महादेवि जय काशिनिवासिनि।

क्षेत्रविघ्नहरे देवि पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

यदि न ठहरना हो तो पूजन के बाद ही प्रार्थना करके वहां से लौटकर पुनः पंचक्रोशी मार्ग के पत्थर के पास जाय और फिर आगे बढ़े।

मार्ग में करमाजीतपुर गांव में जाकर विष्वक्सेनेश्वर का पूजन करता हुआ पुनः लौटकर पंचक्रोशी मार्ग से कर्दमेश्वर जाय। वहां कर्दम तीर्थ में स्नान करके, कूपके जल का दर्शन करके, सपीपस्थ सोमनाथ, विरूपाक्ष, तथा नीलकण्ठ की पूजा करने के बाद कर्दमेश्वर का पूजन करे। पंचधान्य (जौ, गेहूँ, चावल, मूँग, तथा उद) एवं श्वेत तिल उनको अवश्य चढ़ावे और बारम्बार प्रणाम करके वहां पर रात्रिवास करे। श्राद्ध तर्पण तथा हवन करे। ब्राह्मणों का सत्कार करे। इससे देवश्रृण, पितृश्रृण तथा मनुष्यश्रृण से मुक्ति होती है। प्रातःकाल स्नान सन्ध्या से निवृत्त होकर कर्दमेश का पूजन करके प्रार्थना करे और आगे बढ़े।

कर्दमेश महादेव काशिवासिजनप्रिय।

त्वत्पूजनान्महादेव पुनर्दर्शन मस्तु ते ॥

अमरागांव में नागनाथ का, अवदे गांव में चामुंडा, मोक्षेश्वर, तथा कश्यपेश्वर का पूजन करे। 'ॐ चंडमुंडकरे देवि सर्वाशापरिपरिके। नमः क्षेत्रस्थितायै ते यात्रासंगत्वहेतवे' चामुंडा की पूजा इस मंत्र से करे। कश्यपेश्वर के बाद देलहना गांव में वीरभद्र तथा विकटादुर्गा की पूजा करे।

द्विलक्षशक्तिसहिते विकटे योगिनीयुते।

नमस्तेपादयोर्मातः क्षमस्व परमेश्वरि ॥

CC-0. फिर देलहना गांव में उन्मलमैरव, नीलगण, कालकूटगण, विमलादुर्गा, महादेव, नन्दिकेश्वर, भृङ्गी रिटिगणा तथा गणप्रियका पूजा करे और आगे

चल कर गौरा गांव में विरूपाक्ष, मातलदेई चक में यक्षेश्वर, पयागपुर में विमलेश्वर, मोक्षदेश्वर, ज्ञानदेश्वर की, तथा असवारी गांव में अमृतेश्वर की पूजा करते हुए गंधर्वसागर को पार करे। वहां गंधर्वसागर में स्नान तथा तर्पण करके भीमचंडी देवी को दूध से स्नान करावे और उनकी पंचोपचारसे पूजा करे।

भीमचंडिमहादेवि सर्वराक्षसभक्षिणि ।

मुनित्राणकरे देवि नमस्तेस्तु पुनः पुनः ॥

इस मंत्र से भीमचंडी देवी का पूजन करते समय उनका कोटिशक्ति समन्वित रूप में ध्यान करे। तदुपरांत श्राद्ध करे। ब्राह्मणों का सत्कार करे और चंडविनायक, रविरक्ताक्ष गंधर्व, तथा नरकार्णवतारक शिव का पूजन करके वहीं रात्रिवास करे। प्रातःकाल स्नान संध्योपासन तर्पण करके भीमचंडी की पूजा करके उनसे आज्ञा लेकर आगे चले।

भीमचंडि प्रचंडानि मम विघ्नानि नाशय ।

नमस्तेस्तु गमिष्यामि पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

इसके बाद कचनार गांव में एकपादगण का पूजन करके चावल और श्वेत तिल वहां पर पृथ्वी पर छिड़के और आगे चलकर हरपुर गांव में हरैया तालाब के पास महाभीम तथा हरसोस गांव में सड़क से कुछ दूर, गांव के भीतर, भैरव तथा भैरवी की पूजा करते हुए दीनदयालपुर में भूतनाथ का तथा सिंधुसागर पोखरे के समीप लंगोटिया हनुमान के पहले सोमनाथ की आराधना करे। तदनंतर जनसागांव में कालनाथ तथा कपर्दीश एवं चौखंडी गांव में कामेश्वर, गणेश्वर, वीरभद्र तथा चारुमुख का पूजन करे।

आगे चलकर मटौली गांव में गणनाथ की पूजा करके देहली विनायक की अर्चना करे और चिउड़ा, लड्डू, लावा, सत्तू तथा ईख का नैवेद्यलगावे। समीप में ही मंदिर के पीछे की दीवार में षोडशविनायक की पूजा करे। फिर मुहली गांव में उद्दंडविनायक, हीरमपुर में उत्कलेश्वर, करौना ग्राम में रुद्राणी की तपोभूमि को प्रणाम करके रामेश्वर को जाय। पंचक्रोशीयात्रा में रुद्राणीतपोभूमि में रुद्राणी के पूजन का उल्लेख नहीं है परन्तु उनके पूजन का बड़ा माहात्म्य अन्यत्र कहा गया है। रामेश्वर में वरणा नदी में स्नान करके तर्पण करे और तदनंतर श्वेततिल तथा चिल्लपत्रादि से रामेश्वर का पूजन



करे तथा उनके पूर्व में सोमनाथ, भरतेश, लक्ष्मणेश, शत्रुघ्नेश्वर, वावाभूमीश्वर, तथा नहुषेश्वर की पूजा करके वहां निवास करे। श्राद्ध भोजन करके रामेश्वर के सम्मुख जागरण करे और प्रातःकाल स्नान संध्या करके रामेश्वर की पूजा करके उनसे आगे चलने की आज्ञा मांग कर आगे चले—

श्री रामेश्वर रामेणपूजितस्त्वं सनातन ।

आज्ञान्देहि महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

वरणापार सुलनीवारी के पास असंख्यातशिवलिंगों की पूजा कर सड़क के दक्षिण करोमा ग्राम में थोड़ी दूर जाकर देवसंवेश्वर का पूजन करके कुछ दान करे और थोड़ा विश्राम करके सदरबाजार में पाशपाणिगणेश को जाय। वहां उनका पूजन करके निवास करे। प्रातः काल स्नान करके उनसे प्रार्थना करे और आगे बढ़े।

पाशपाणेगणाध्यक्ष मततं लड्डुकप्रिय ।

आज्ञान्देहि गणश्रेष्ठ पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

पाशपाणिगणेश में निवास का उल्लेख काशीरहस्य में नहीं है यह वचन सेतु लिंगपुराण का है। काशीरहस्य के अनुसार पाशपाणिगणेश का पूजन करके पुनः वरणा पार लौटकर आगे चलकर खजुरी गांव में पिसनहरिया के पास पृथ्वीश्वर का पूजन करे और दोनदयालपुर में यूपसरोवर ( सोना तालाब ) में मार्जन करके घीरे घीरे कपिलधारा को चले। शास्त्र की दृष्टि से शिवपुर में ठहरने का विधान नहीं है परन्तु शिष्टाचार सम्मत है। शिवपुर में पांडववापी के जल में स्नानतर्पण करके दान धर्म करे। प्रातः काल फिर वहीं स्नानतर्पण करके आगे चले। कपिलधारा में स्नानतर्पण तथा श्राद्ध करके वृषभध्वज का पूजन करे और वहां निवास करे। प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर उनका पुनः पूजन करे और आज्ञा मांगकर

वृषभध्वजदेवेश पितृणाम्मुक्तिदायक ।

आज्ञान्देहि महादेव पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥

तथा कपिलाहद ( कपिलधारा तालाब ) की प्रदक्षिणा, ज्वालानृसिंह की पूजा तथा प्रदक्षिणा करके, वरणा पार करके वरणासंगम में स्नान करे और आदिकेशव, संगमेश्वर, तथा खर्वविनायक की अर्चना करने के बाद विष्णु भगवान् के नाम लेकर पृथ्वी पर बराबर जो छिड़कता हुआ प्रह्लादेश्वर ( ए. १०/८० ) को जाय। उनके पूजन के बाद त्रिलोचन ( ए. १/८० )

की पूजा करता हुआ पंचगंगा में स्नान करके विंदुमाधव का पूजन करे और गभस्तीश्वर, मंगलागौरी (के. २४/३४), वशिष्टवामदेव (सी के. ७/६१), तथा पर्वतेश्वर (सीके. ७/१५०) की पूजा करता हुआ मणिकर्णिका घाट पर महेश्वर तथा सिद्धिविनायक की अर्चना करे। वहाँ बैठकर छप्पन विनायक का स्मरण करे। फिर मणिकर्णिका में स्नान करके मौन होकर विश्वेश्वर को जाय। वहाँ उनको प्रणाम करके समीप में बैठे, फिर उनकी पंचोपचार पूजा करके बारम्बार प्रणाम करके मुक्तिमंडप में आकर हम कृतार्थ हो गये ऐसा विचार करता हुआ बैठे। विष्णु, दंडपाणि, डुंदिराज भैरव, द्रुपदादित्य, तथा मोदादिपंचविनायकों का पूजन करके प्रदक्षिणा किये हुए देवताओं का क्रम से स्मरण कर और तदनंतर विश्वेश्वर से प्रार्थना करे।

जय विश्वेश विश्वात्मन् काशीनाथ जगद्गुरो ।

त्वत्प्रसादान्महादेव कृता क्षेत्र प्रदक्षिणा ॥

अनेकजन्मपापानिकृतानिममशंकर ।

गतानि पंचक्रोशात्मलिंगस्यास्य प्रदक्षिणात् ॥

त्वद्भक्तिकाशिवासाभ्यां रहितः पापकर्मणा ।

सत्संगश्रवणाद्यंश्च कालोगच्छुत्तुनः सदा ॥

हर शंभो महादेव सर्वज्ञ सुखदायक ।

प्रायश्चित्तं सुनिवृत्तं पापानां त्वत्प्रसादतः ॥

पुनः पापमतिर्मास्तु घर्मबुद्धिः सदास्तु मे ॥

यह प्रार्थना करके यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान देकर हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करे—

पंचक्रोशस्य यात्रेयं यथावद्यामयाकृता ।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादादुमापते ॥

इसके बाद न्यूनातिरिक्त दोष की निवृत्ति के लिये भूयिषीप्रदक्षिणा का संकल्प करके घर आकर ब्राह्मणों को भोजन करवा कर स्वयं भोजन करे।

नगर प्रदक्षिणा—

पंचक्रोशी यात्रा का यह विधान जनसाधारण के लिये है। परन्तु कुछ लोकोपदेशों से भी होते हैं जिनमें नगर प्रदक्षिणा का विशेष उल्लेख है अर्थात् वे



लोग जो वाराणसी क्षेत्र के बाहर नहीं जाते। उनके लिये नगर प्रदक्षिणा यात्रा का निर्धारण हुआ है जिसके करने से उनको पंचक्रोशी करने का फल प्राप्त हो जाता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार इस यात्रा का विधान इस प्रकार है :—

गंगास्नान करके विश्वेश्वर तथा अन्नपूर्णा ( अन्नपूर्णा जी तथा उनके समीप के राममंदिर में भवानी गौरी ) का पूजन करके मोदादि पांचों विनायक, दुर्द्विराज, दंडपाणि, विश्वेश्वर के पश्चिम द्वार के सामने के भैरव, का पूजन करना, तदुपरांत सिद्धविनायक की उनको दक्षिण रखकर प्रदक्षिणा करके यात्रा प्रारम्भ करना और ललिताघाट पर काशीदेवी तथा ललितादेवी, भीरघाट पर जरासंधेश्वर, मानमंदिरघाट पर सोमेश्वर तथा दाल्भ्येश्वर, दशाश्वमेध घाट पर शूलतकेश्वर, आदिवाराह, दशाश्वमेधेश्वर, तथा वन्दीदेवी का पूजन करता हुआ गंडेघाट पर सर्वेश्वर, केदारघाट पर केदारेश्वर, हनुमान घाट पर हनुमदीश्वर का दर्शन पूजन करे। तदनंतर लोलार्क पहुँचने के पहले ही घाट के ऊपर चढ़कर अर्कविनायक को अपने बाएं रखकर असिसंगम पर असिसंगमेश्वर का पूजन करके दुर्गा जी को जाय और उनकी अर्चना करके पुनः उसी स्थान पर लौटकर आवे और तब आगे यात्रा को चलें। इस यात्रा में अब से प्रथम आवरण के विनायकों को सदैव अपने बाएं रखना है और उनके जितना निकट संभव हो यात्रा करना है। पंचक्रोशी के जो देवता यात्री के बाएँ पड़ेंगे उनके समीप रुककर उनकी ओर मुख करके उनकी अर्चना करना। अपनी सुविधानुसार यह यात्रा एक रात्रि दो रात्रि अथवा तीन रात्रि में पूरी करना परन्तु प्रत्येक दिन दंडपाणि की पूजा अवश्य करनी चाहिये अर्थात् विश्रामस्थल से दंडपाणि तक नित्य आकर उनका पूजन करके पुनः विश्रामस्थल को लौट जाना और वहां से फिर आगे चलना। असी तथा वरणा को कभी भी पार नहीं करना। इन दोनों के मध्य में ही प्रथम आवरण के विनायकों ( अर्क विनायक, दुर्गाविनायक, भीमचंडीविनायक, देहलीविनायक, उद्धदंडविनायक, पाशपाणिविनायक तथा खर्वविनायक ) को सदैव अपने बाएं रखकर यह यात्रा की जाती है दंडपाणि की पूजा का यह मंत्र है :—

दंडपाणे यक्षपते क्षेत्रसन्ध्यासिबल्लेम ।

लौटे हुए प्रह्लादघाट पर प्रह्लादेश्वर का, तथा त्रिलोचन का पूजन करता हुआ पंचगंगा में स्नान करके बिंदुमाधव, गभस्तीश्वर, मंगलागौरी, वशिष्ठ वामदेव, पर्वतेश्वर, की पूजा करके मणिकर्णिका घाट पर महेश्वर तथा सिद्धि-विनायक की पूजा करके दंडपाणि की उपर्युक्त मंत्र से अर्चना प्रार्थना करके विश्वेश्वर की पूजा तथा प्रार्थना करना। ब्राह्मणों को भूयिषी दक्षिणा दना तथा यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन करवाना। इस यात्रा का स्थूल रूप से यह विधान है। देवताओं का पता ठिकाना पंचक्रोशी यात्रा वर्णन में स्पष्ट रूप से दिया हुआ है। इस कारण यहां उसकी पुनरावृत्ति नहीं की गयी।

### ( ड ) विविध वार्षिक यात्राएं

ये यात्राएं विशेष तिथियों अथवा योगों से सम्बद्ध हैं। तिथियात्राएं वार्षिक होती हैं परन्तु योग यात्राएं वर्ष में कई बार पड़ती हैं। वारयात्राएं प्रति सप्ताह ही पड़ती रहती हैं। सामान्य तिथियात्राएं भी प्रत्येक दश में पड़ा करती हैं।

### ( १ ) वार यात्राएं—

रविवार - आदित्ययात्रा विशेषतः लोलार्क की। अर्कविनायक (लोलार्क के समीप) तथा भैरव यात्रा हर मास में हर रविवार को। चैत्र में साम्वादित्ययात्रा, ज्येष्ठ में बृहदकालयात्रा तथा नरनारायणयात्रा (महाघाट पर बदरीनारायण नाम से प्रसिद्ध)। पौषकी उत्तरार्क यात्रा अब लुप्त हो गयी है।

सोमवार—संकटा जी, चन्द्रेश्वर तथा करणेश्वर की प्रत्येक मास में। श्रावण में केदारेश्वर यात्रा।

मंगलवार—कालभैरव, दुर्गाजी, संकटमोचन तथा अन्य हनुमदायतनों तथा बन्दीदेवी की। भौमाष्टमी भैरवयात्रा के लिये परम पुनीत। भौमवती चतुर्दशी तथा भरणी नक्षत्र में यमतीर्थ में स्नान तथा यमेश्वर पूजन।

गुरुवार—गुरुपुण्य योग में बृहस्पतीश्वरयात्रा। यदि उस दिन व्यतीपात योग भी हो तो ज्ञानवापी यात्रा।

शुक्रवार—संकटाजी तथा शुक्रेश्वर की यात्रा।

शनिवार—शनैश्वरेश्वर ( विश्वनाथ जी के घेरे में ) की यात्रा। शनि प्रदोष को कामेश्वर तथा जलेश्वर की यात्रा।



## ( २ ) तिथि यात्राएं—

**चतुर्थी**—डुंदिराज यात्रा, विनायक यात्रा । यदि चतुर्थी को मंगलवार हो तो अंगारेश्वर यात्रा ।

**पष्ठी**—यदि रविवार हो तो आदित्य यात्रा ।

**सप्तमी**—यदि रविवार हो तो आदित्य यात्रा ।

**अष्टमी**—भैरव यात्रा, दुर्गा यात्रा, स्वप्नेश्वरी यात्रा ( लोलार्क उत्तर वी. २/३३ ), चंडी यात्रा पिंगलायात्रा ( सिद्धेश्वरी के समीप अदृश्य ), ईशानेश्वर यात्रा, त्रिलोचन यात्रा, मत्स्योदरी यात्रा, ज्ञानवापी यात्रा, सिद्ध-योगेश्वरी यात्रा ( सिद्धेश्वरी नाम से प्रसिद्ध ) । भौमाष्टमी को भैरव यात्रा विशिष्ट ।

**नवमी**—चंडीयात्रा ( अप्रचलित ), कुलस्तंभ यात्रा ( लाटभैरव में ) व्यासपुरी यात्रा ( कर्णघंटा तालाब के पास । व्यासेश्वर का मंदिर अब जल मग्न है इससे उनका दर्शन नहीं होता । केवल शिखर का ही दर्शन होता है ।

**एकादशी**—विष्णु यात्रा ।

**द्वादशी**—ललिता घाट पर काशी देवी की यात्रा । ज्ञानवापी पर एकादशीब्रतोपरान्त जलपान ।

**चतुर्दशी**—ईशानेश्वर, आत्मावीरेश्वर तथा सिद्धयोगेश्वरी की यात्रा ।

**अमावास्या**—सोमवती अमावास्या को चन्द्रकूप में तथा कपिलधारा में पितृश्राद्ध । भौमवती अमावास्या को केदारकुंड में श्राद्ध । यदि गुरुवार हो तो धर्मकूप पर पितृश्राद्ध । यदि सूर्यग्रहण हो तो लोलार्क, कुरुक्षेत्र में स्नान ।

**पूर्णिमा**—चन्द्रेश्वर यात्रा ।

## ( ३ ) विशेष तिथियों की यात्राएं

**चैत्रकृष्ण पक्ष में**—प्रतिपदा को योगिनीयात्रा ( चौसठ्ठी घाट पर ) । प्रतिपदा से प्रारम्भ करके चतुर्दशी तक प्रतिदिन शैलेशादि चतुर्दश लिंगों की क्रमिक यात्रा इस क्रम से :—

शैलेश्वर ( मढ़िया घाट पर ), संगमेश्वर ( वरणा संगम पर ), स्त्रालीनेश्वर ( प्रह्लादघाट के पूव ए. ११ दिह ), मय्येश्वर ( के. ५३१८३ के सामने ),

हिरण्यगर्भेश्वर ( त्रिलोचन घाट ऊपर की मढ़ी में , ईशानेश्वर ( बांस-  
फाटक सी के. ३७।४३ में ), गोप्रदेश्वर ( लालघाट के. ४।२४ ), वृषभ-  
ध्वज ( कपिलघारा के तट पर , उपशान्तेश्वर ( संकटा जी के पास सी के.  
२।४ ), ज्येष्ठेश्वर ( सप्तसागर में के. ६२।१४४ ), निवासेश्वर ( वहाँ के.  
६३।२५ ), शुक्रेश्वर ( कालिकागली में डी. ८।३० ), व्याघ्रेश्वर ( सप्त-  
सागर में के. ६३/१६ ), तथा जम्बुकेश्वर ( बड़े गणेश के द्वार पर  
के. ५८।१०३ ) ।

संभव हो तो चतुर्दशी को इन चौदहों शिवायतनों की यात्रा करे ।

चैत्र शुक्लपक्ष में—प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त निम्नवत् :—

प्रतिपदा :—शैलपुत्रीदुर्गायात्रा ( मढ़ियाघाट पर ), मुखनिर्मालिका  
गौरी यात्रा ( गायघाट पर हनुमान जी में ) । २ ब्रह्मचारिणीदुर्गायात्रा ( दुर्गा-  
घाट पर ), ज्येष्ठागौरीयात्रा ( सप्तसागर के. ६३।२४ ), ३ चित्रघंटा दुर्गा  
यात्रा चन्दूनाऊकी गली सीके. २३।३४ ), सौभाग्यगौरीयात्रा ( आदि विश्वे-  
श्वर में ) मंगलागौरीयात्रा । पार्वतीश्वर यात्रा ( आदि महादेव में ) नवगौरी  
यात्रा । ४ दुर्गायात्रा ( दुर्गाकुंड पर ) । शृङ्गारगौरी यात्रा ( विश्वनाथ मंदिर  
में ) । ५ वागीश्वरी यात्रा ( जे. ६।३३ ), विशालाक्षीगौरी यात्रा ( मीरघाट  
में डी. ३/८५ ) । ६ कात्यायिनीदुर्गायात्रा ( आत्मावीरेश्वर में ) । ललिता  
गौरी यात्रा ( ललिता घाट पर ) । ७ कालरात्रि यात्रा ( कालिका गली में ) ।  
भवानी गौरी यात्रा ( अन्नपूर्णा जी के पास के राम मंदिर में ) । ८ अन्नपूर्णा  
यात्रा । संकटा यात्रा । मंगलागौरी यात्रा । भवानी यात्रा । मध्यमेश्वर यात्रा ।  
ज्येष्ठा गौरी यात्रा । महामुण्डा यात्रा ( बागेश्वरी में ) । ९ सिद्धेश्वरी दुर्गा  
यात्रा ( सी के. ७।१२४ ) । महालक्ष्मी गौरी यात्रा ( लक्ष्मीकुंड पर ) । १३  
कामेश्वर यात्रा ( सी. २।६ ) । १४ पशुपतीश्वर यात्रा ( सीके. १३।६६ में ) ।  
१५ कृतिवासेश्वर यात्रा ( के. ४६।२३ ), चन्द्रेश्वर यात्रा ( सीके. ७।१२४ ),  
केदारेश्वर यात्रा ।

वैशाख कृष्ण पक्षमें—प्रतिपदा से प्रारम्भ करके चतुर्दशी तक प्रतिदिन  
ओंकारादि चतुर्दश लिंगों की क्रमिक यात्रा :—

- (१) ओंकारेश्वर ( पठानी टोला के पास ए. ३३।२३ में टीले पर )
- (२) त्रिलोचन ( त्रिलोचन घाट के ऊपर ए. २।८० ), ( ३ महादेव  
( आदि महादेव त्रिलोचन के पिछवाड़े ( ए. ३।६२ ) ( ४ ) कृतिवासेश्वर



( वृद्धकाल के पास के० ४६।२३ ), ( ५ ) रानेश्वर ( वहीं के० ५३।४० ), ( ६ ) चन्द्रेश्वर ( सिद्धेश्वरी पर सीके० ७।१२४ ), ( ७ ) केदारेश्वर ( प्रसिद्ध ( ८ ) चमेश्वर ( भीरघाट के समीप डी० २।११ ), ( ९ ) आत्मावीरेश्वर ( संकठा जी के पास सीके० ७।१५८ ), ( १० ) कामेश्वर ( मच्छोदरी के दक्षिण ए० २।९ ), ( ११ ) विश्वकामेश्वर ( स्त्रीय फील्डरोड पर ए० ३४।६१ में, अथवा संकठा जी के पास वृहस्पतीश्वर में ), ( १२ ) मणिकर्णीश्वर ( गोमठ के पास सीके० ८।१२ ), ( १३ ) अविमुक्तेश्वर ( विश्वनाथ जी के घेरे में आनेयकोण के छोटे मंदिर में, तथा ( १४ ) विश्वेश्वर ।

अष्टमी को संकठा जी की यात्रा होती है । त्रयोदशी को यदि शनिवार हो तो कामेश्वर की यात्रा का विशेष माहात्म्य है । संभव हो तो चतुर्दशी को इन चौदहों शिवायतनों की यात्रा करे ।

वैशाखशुक्लपक्ष में तृतीया को त्रिलोचन यात्रा, पिलिपिलातीर्थ (त्रिलोचन घाट पर गंगाजी में) तथा पादोदककूप (त्रिलोचन के समीप पिलिपिला का कुंआ नाम से प्रसिद्ध ए० २/८७ ए) में स्नान, परशुरामेश्वर यात्रा ( नन्दनसाह महल्ले में सी के. १४/१६ ) वैशाखशुक्ला चतुर्दशी को आंकारेश्वर की तथा नृसिंह पीठों की यात्रा ।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में—अमृतेश्वरादि चतुर्दशायतनों की यात्रा प्रतिपदा से प्रारंभ करके चतुर्दशी तक प्रतिदिन निम्नांकित क्रम से—

( १ ) प्रतिपदा को अमृतेश्वर ( स्वर्गद्वारी पर सी के. ३३/२८ ), ( २ ) तारकेश्वर ( मणिकर्णिका घाट पर ), ( ३ ) ज्ञानेश्वर ( लाहोरी टोला में डी. १।३२ ) ( ४ ) करुणेश्वर ( वहीं सी के ३४/१० ) ( ५ ) मोक्षद्वारेश्वर ( वहीं ), ( ६ ) स्वर्गद्वारेश्वर स्वर्गद्वारी पर सी के. १०/१६ ), ( ७ ) ब्रह्मेश्वर ( बालमुकुन्द के चौहट्टा में डी. ३३/६६-६७ ), ( ८ ) लांगलीश्वर ( खोवा बाजार में सीके. २८/४ ), ( ९ ) वृद्धकालेश्वर ( दारानगर में के. ५२/३६ ), ( १० ) वृषेश्वर ( गोरखनाथ के टीले पर के. ५८/७८ ), ( ११ ) चंडीश्वर ( सदरबाजार में चंडी देवी के मंदिर में ), ( १२ ) नंदिकेश्वर ( ज्ञानवापी के उत्तर स्थानपूजन लिंग लुप्त है ), ( १३ ) महेश्वर ( ज्ञानवापी के नैऋत्यकोण के पीपल के नीचे अथवा मणिकर्णिका घाट पर, ( १४ ) ज्योतिरूपेश्वर ( गोमठ के समीप सी के. ८/१० )

संभव हो तो चतुर्दशी को इन चौदहों शिवायतनों की यात्रा करे ।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में—प्रतिपदा से दशमी तक नित्य दशाश्वमेधेश्वर की यात्रा ( शीतला जी के मंदिर में दशाश्वमेध पर ) ।

अष्टमी को ज्येष्ठागौरी यात्रा ( सतसागर में के. ६३/२४ में ) । दशमी को गंगाजी की यात्रा । गंगेश्वर की यात्रा ( ज्ञानवापी के पूर्व पीपल के नीचे स्थानपूजन अथवा पशुपतीश्वर के समीप सी के. १३/७६ ) । दशहरेश्वर यात्रा ( दशाश्वमेध पर शातला जी के मंदिर में ) ।

चतुर्दशी को ज्येष्ठेश्वर यात्रा ( सतसागर में के. ६२/१४४ ) । वहाँ ज्येष्ठ विनायक यात्रा । यदि इस दिन अनुराधानक्षत्र तथा सोमवार पड़े तो जैगा षव्य गुहा यात्रा ( नरहरि पुरवा में जागेश्वर के पीछे जे. ६६/३ ) पूर्णिमा को अमरेश्वर यात्रा ( लोलार्क के पास वा. २/२० ) ।

आषाढ शुक्ल पक्ष में—द्वितीया को रथयात्रा । चतुर्दशी को आषाढीश्वर यात्रा ( रानी बेतिया के मंदिर के पीछे अथवा राजादरवाजा के पास सी के. ५४/२४ ) ।

पूर्णिमा को व्यासेश्वर यात्रा ( कर्ण घटा पर मंदिर के शिखर का दर्शन ) ।

श्रावणकृष्ण पक्ष में—अमावास्या को पचपुष्कारिणी यात्रा ( कपाल मोचन लाटभैरव के तालाब में, ऋणमोचन, पापमोचन, वैतरणी तथा ऐतरणी में स्नान ) ।

श्रावण शुक्ल पक्ष में—चतुर्थीको दुर्दिराज यात्रा । पंचमी को कर्कोटक वापी यात्रा ( नाग कुंआ प्रसिद्ध ), समीप में वासुकि कुंड यात्रा । संकठा घाट पर वासुकीश्वर यात्रा ( सी के. ७/१५५ में ) । चतुर्दशी को आदिमहादेव में पवित्रारोपण ( त्रिलोचन मंदिर के पीछे ए. ३/१२ में ) ।

भाद्रपद कृष्णपक्ष में—तृतीया को विशालाक्षी यात्रा ( मीर घाट महल्ले में डी. ३/८५ ) । अष्टमी को कृष्णेश्वर यात्रा ( संकठा जी की दीवार में हरिश्चंद्रेश्वर के सामने ), तथा गंगातीरस्थ महालक्ष्मी यात्रा, केदार मंदिर के पास बी. ६/६६ ) ।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष में—तृतीया को मंगला गौरी यात्रा । चतुर्थी को दुर्दिराज यात्रा । षष्ठी को लोलार्क यात्रा । अष्टमी से सोलह दिनों तक लक्ष्मी-कुंड पर महालक्ष्मी यात्रा । द्वादशी को वरणाश्रम यात्रा । पूर्णिमा



को आश्विनेश्वर यात्रा (भोखला घाट के ऊपर सी के. २/२६ में दो शिव लिंग) तथा लाटमैरव पर कुलस्तंभ यात्रा ।

आश्विन कृष्ण पक्ष में—तृतीया को ललिता यात्रा ( ललिता घाट पर डी. १/६७ ) । नवमी को मातृकुंड यात्रा ( ललापुरा में माताकुंड नाम से प्रसिद्ध ) । अमावास्या को पितृकुंड यात्रा ( पितरकुंडा नाम से प्रसिद्ध ) ।

आश्विन शुक्ल पक्ष में—प्रतिपदा से नवमी तक नवदुर्गायात्रा ( चैत्र नवरात्र में वर्णित क्रम से ) । विश्वमुखा गौरी ( धर्मकूप महल्ले में डी. २/१३ ) तथा बड़ी दुर्गा ( दुर्गाकुंड पर, की भी नित्ययात्रा । योगिनी यात्रा ( राणा महल में नित्य यात्रा ) । अष्टमी को भवानी गौरी यात्रा ( अन्नपूर्णा जी के पास राममंदिर में ), महामुंडा चंडी यात्रा ( वागीश्वरी देवी की जे. ६/३३ तथा छागवक्त्रेश्वरी यात्रा ( कपिलधारा में वृषभध्वज मंदिर के बाहर भग्न विशाल मूर्ति ) ।

कार्तिक कृष्ण पक्ष में—चतुर्दशी को मानसरोवर यात्रा ( छुत ) तथा हनुमत्पूजन ( संकट मोचन में ) । अमावास्या को लक्ष्मीपूजन तथा कालीपूजन ।

कार्तिक शुक्लपक्ष में—द्वितीया को यमेश्वर यात्रा ( संकटाघाट के समीप यमघाट पर स्नान तथा वहीं यमेश्वर पूजन ) । अष्टमी को धर्मेश्वर यात्रा ( धर्मकूप महल्ले में डी २/२१ ) । एकादशी की बिंदुमाधव यात्रा ( यह यात्रा एकादशी से पूर्णिमा तक नित्य चलती है ) । चतुर्दशी को विश्वेश्वर यात्रा ।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में—द्वितीया को दंडपाणि यात्रा ( डुंडिराज गली में सी के. ३६/१० में अथवा कालमैरव मंदिर के पीछे के. ३२/२६ की बाहरी दीवाल में चैत्रपाल मैरव नाम से ), अष्टमी को कालमैरव यात्रा ( प्रसिद्ध ) ।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में—पञ्ची को वृद्धकाल के घेरे में मातलीश्वर यात्रा ( वर्तमान नाम मालतीश्वर ) तथा लोलाक यात्रा । एकादशी को कालमाधव यात्रा ( काठ की हवेली के पीछे के. ३०/४ में ) तथा पादोदक तीर्थ यात्रा ( बरणा संगम में स्नान तथा आदिकेशव का पूजन एकादशी से पूर्णिमा तक चलता है ) । चतुर्दशी को पिशाचमोचन यात्रा । पूर्णिमा

को गोपीगोविन्द यात्रा ( लालघाट पर गौरी शंकर मंदिर में के. ४/२४ में )  
तथा भृगुकेशव यात्रा ( गोलाघाट पर नन्दू फडिया की सीढ़ी के ऊपर )

पौष शुक्ल पक्ष में—पूर्णिमा को नरनारायण यात्रा ( महथा घाट पर  
वदरी नारायण नाम से प्रसिद्ध ।

माघकृष्ण पक्ष में—चतुर्थी को वक्रतुंड यात्रा ( वड़े गणेश पर )  
तथा चतुर्दशी को अविमुक्तेश्वर यात्रा ( विश्वनाथ के घेरे में आग्नेय कोण के  
मंदिर में अथवा ज्ञानवापी मस्जिद की सीढ़ियों के सामने खिड़की में ) ।

माघ शुक्ल पक्ष में—चतुर्दशी को ढुंढिराज यात्रा तथा मुखप्रेक्षणिका  
यात्रा ( मंगला गौरी में उनके बाईं ओर गभस्तीश्वर के गर्त में ) । सप्तमी  
को यदि रविवार हो तो लोकार्कयात्रा तथा केशवादित्य यात्रा ( वरणा  
संगम में स्नान तथा मौन रह कर आदिकेशव मंदिर में केशवादित्य  
का पूजन ) । सूर्यकुंड के तट पर सागवादित्य यात्रा ।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष में—चतुर्दशी अर्थात् महाशिवरात्रि को अविमुक्तेश्वर,  
कृत्तिवासेश्वर, प्रीतिकेश्वर ( साक्षी विनायक के पिछवाड़े डी. १०/८ में )  
तथा रत्नेश्वर की विशेष यात्राएं । योंतो सभी शिव मंदिरों में दर्शन पूजन ।  
बहुत से लोग इस दिन द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करते हैं ।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष में—पूर्णिमा को होलिकादहन के पूर्व दाल्म्ये-  
श्वर यात्रा मानमंदिर घाट के ऊपर डी. १६/२८ ) । नैमिषारण्य यात्रा  
( ढुंढिराज गली में अपारनाथ मठ में ब्रह्मावर्त कूप में स्नान तथा वहीं देवदेव  
का पूजन ) ।

प्रदक्षिणा.



## श्री ओंकारेश्वर की अन्तर्गृहयात्रा

मत्स्योदरी तीर्थ में स्नान या आचमन-मार्जन ।

ओंकारेश्वर के समीप—शूलेश्वर, नादेश्वर, विन्दुवेश्वर, अकाररूपात्मने ओंकारेश्वर, उकाररूपात्मने ओंकारेश्वर, मकाररूपात्मने ओंकारेश्वर, तार तीर्थ, शुभोदक कूप, श्रीगुहा, गगेश्वर (लुप्त), दमनेश्वर । प्रह्लादघाट के पास—प्रह्लादकेशव, प्रह्लादेश्वर, विश्वेश्वर शान्तनम् (प्रह्लादेश्वर के उत्तर में) । त्रिलोचन के समीप—पिलिप्पिला तीर्थ, त्रिलोचनेश्वर, अरुणादित्य वाल्मीकीश्वर, महादेव, बदरीनारायण । राजमंदिर में—हनुमान जी में उद्दालकेश्वर । पंचगंगा के ऊपर—कपिलेश्वर गुहा, विन्दुमाधव, धूतपापेश्वर, किरणेश्वर । रामघाट हनुमदीश्वर । मध्यमेश्वर के पास—मध्यमेश्वर, जमदग्नीश्वर, भैरवेश्वर, शिवेश्वर । दारानगर—मृत्युञ्जय, मालतीश्वर, महाकाल कुण्ड (दुल्लो गड़हो), वृद्धकालेश्वर, महाकालेश्वर, दक्षेश्वर, बन्दीश्वर, बन्दीश्वर कुण्ड (लुप्त), जयन्तेश्वर, अन्तकेश्वर, हस्तिपालेश्वर, ऐरावतेश्वर, ऐरावतकुण्ड (लुप्त), विश्वक्सेनेश्वर (लुप्त), कृत्तिवासेश्वर (मस्जिदवाला स्थान), कृत्तिवासेश्वर (नये), हंसतीर्थ (हरतीर्थ), रत्नेश्वर, सतीश्वर, ऋणहरेश्वर । कालभैरव के पास—कालकूप, कालेश्वर, कालराज । सप्तसागर—जैगीपन्थेश्वर, व्याघ्रेश्वर, कंदुकेश्वर, देवलेश, शतकालेश, हेतुकेश्वर । औषडनाथ की तकिया—तक्षककुण्ड (लुप्त) तक्षकेश्वर, वासुकीश्वर, वासुकी कुण्ड (लुप्त) । नरहरिपुरा—ईश्वरगंगी (इसरगंगी), जैगीपन्थ गुहा, अग्नीप्रेश्वर (जागेश्वर), जैतपुरा—नागकुण्ड (नागकुआं) कर्कोटक, नागेश्वर, वागीश्वरी, वागीश्वरी वापी (लुप्त), सिद्धवापी, सिद्धेश्वर, जराहरेश्वर, सोमेश्वर, सिद्धगण (लुप्त) । मढ़ियाघाट—शैलेश्वर, शैलपुत्री, वरणातीर्थ । पठानीटोला—पापमोचन तीर्थ (नौआपोखरा), पापमोचनेश्वर, ऋणमोचन तीर्थ, अंगारेश्वर । ऋणमोचन और ग्वाल गड्ढा के बीच), हनुमान फाटक—धन्वन्तरीश्वर (धनदेश्वर), धन्वन्तरी कूप हलिशेश्वर । विश्वकर्मेश्वर (ग्वाल गड्ढा), लाटभैरव—कपालमोचन तीर्थ, नौ भैरव, कपालेश्वर समीप में ऐतरणी, वैतरणी । वरणागंगा संगम, संगमेश्वर चतुर्मुखेश्वर (प्रयाग लिंग), शांतिकरी गौरी, केशवादित्य, आदिकेशव, ज्ञानकेशव, वेदेश्वर, नक्षत्रेश्वर दण्डीश्वर, तुंगेश्वर, गजतीर्थ, भैरव तीर्थ, तथा स्वर्णानेश्वर (प्रह्लादघाट के समीप) ।

इस यात्रा में मत्स्योदरीतीर्थ से प्रारम्भ होकर ओंकारेश्वर के उच्च  
 मार्ग से होते हुए भारद्वाजी टोला, प्रह्लादघाट, रामघाट के बगल में नयाघाट  
 से ऊपर गोलागली वाले मार्ग के बीच से सिद्धेश्वरी देवी के मन्दिर की बा  
 छोड़ते हुए कश्मीरीमल की हवेली के बगल से पशुपतीश्वर गली में घुस  
 हैं पशुपतीश्वर गली के बीच से ही लक्ष्मीचौतरा निकल कर चौक की ओ  
 जाते ही लक्ष्मीचौतरे की चौमोहानी पर से दाहिने घूमकर चित्रघंट  
 वाली गली में ऊपर चढ़ते हैं और उसी मार्ग से चौक में निकल आते  
 हैं। वहाँ से मध्यमेश्वर, वृद्धकालेश्वर, कालभैरव होते हुए पुनः वही  
 चौक में आते हैं और गोविन्दपुरा में घुसकर मछरहट्टा फाटक से होते हुए  
 बाएँ गली में घुसकर गुदड़ी बाजार की ओर निकलते हैं। वहाँ से  
 काशीपुरा चौमोहानी से ज्येष्ठेश्वर जाते हैं पुनः उसी मार्ग से लौटकर  
 कबीरचौरा से बेनिया जानेवाली सड़क पर आते हैं और दाहिने मुड़कर  
 बरनवाल घर्मशाला के बगल से औषडनाथ की तकिया होते हुए झंडा-  
 तले निकलते हैं और वहाँ से मिडिल स्कूल के सामने नाटी इमली वाले  
 मार्ग से होते हुए ईश्वरीगंगा जाते हैं। वहाँ से ढिगिया होते हुए नागकुंआ  
 जाते हैं और वहाँ से बागेश्वरी होकर पुनः नागकुंआ होते हुए शैलपुत्री जाते  
 हैं जहाँ रात्रि में निवास होता है। प्रातःकाल वरणा के तीरे से पुल पर  
 चढ़कर कपालमोचन होते हुए बड़ी सड़क पर आते ही सामने पापमोचन  
 तीर्थ जाते हैं। बलुआबीर वाले मार्ग से हनुमान फाटक के बीच ऋण-  
 मोचन तीर्थ आदि का दर्शन करते हुये हनुमान मन्दिर को बाएँ छोड़ते हुए  
 चौमोहानी से पीलीकोठी के समीप घनेसरामठ में धन्वन्तरीश्वर का दर्शन कर  
 पुनः गोलगड्डा स्थित विश्वकर्माेश्वर का दर्शन कर कपालमोचन तीर्थ जाते  
 हैं। बड़ी लाइन के नीचे से दाहिने मुड़कर जाने पर ऐतरणी, वैतरणी के  
 बगल से छुतहा अस्पताल होते हुए सड़क पर आते हैं। सड़क के किनारे-किनारे  
 वरणा संगम जाते हैं वहाँ से स्वर्णेश्वर प्रह्लादेश्वर होते हुए पुनः ओंकारे-  
 श्वर पर जाकर यात्रा समाप्त करते हैं। यही सारा मार्ग ओंकार अन्तर्गह  
 क्षेत्र कहा जाता है। ऐसा बताया जाता है कि जब यहाँ जंगल था तब सीमा  
 थोड़ा हटबढ़ कर थी पर अब सीमा पर मकान आदि बन जाने के कारण  
 थोड़ा अगल-बगल से जाना पड़ता है।

। यह यात्रा क्रम केदारेश्वर के हरिवन् वावा तथा पंडित वैकुण्ठ नाथ  
 उपाध्याय की कृपा से प्राप्त हुआ है। तदर्थ लेखक तथा प्रकाशक उनके  
 अत्यन्त आभारी हैं।



itized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Coll

— यात्रा में मत्स्योदरीतीर्थ से प्रारम्भ होकर :

ते हए भारद्वाजी गोला घाट

. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः  
मोचन पापमोचने  
घाट के बीच ऋण-  
मन्दिर को बाएँ छोड़ते हुए  
मिठ में धन्वन्तरीश्वर का दर्शन कर  
शिवश्वर का दर्शन कर कपाञ्जमोचन तीर्थ जाते  
हैं। वहाँ से बाहिने मुड़कर जाने पर ऐतरणी, वैतरणी के  
बगल अस्पताल होते सड़क पर आते हैं। सड़क के किनारे-किनारे  
वरणा संगम जाते हैं वहाँ से स्वर्णेश्वर प्रह्लादेश्वर होते हुए पुनः ओंकारे-  
श्वर पर आकर यात्रा समाप्त करते हैं। यही सारा मार्ग ओंकार अन्तर्गृह  
क्षेत्र कहा जाता है। ऐसा बताया जाता है कि जब यहाँ जंगल था तब सीमा  
योड़ा हटवद कर थी पर अब सीमा पर मकान आदि बन जाने के कारण  
योड़ा अगल-बगल से जाना पड़ता है।

। यह यात्रा क्रम केदारेश्वर के हरिवन् वावा तथा पंडित वैकुण्ठ नाथ  
उपाध्याय की कृपा से प्राप्त हुआ है। तदर्थ लेखक तथा प्रकाशक उनके  
अत्यन्त आभारी हैं।